सात कालखण्ड

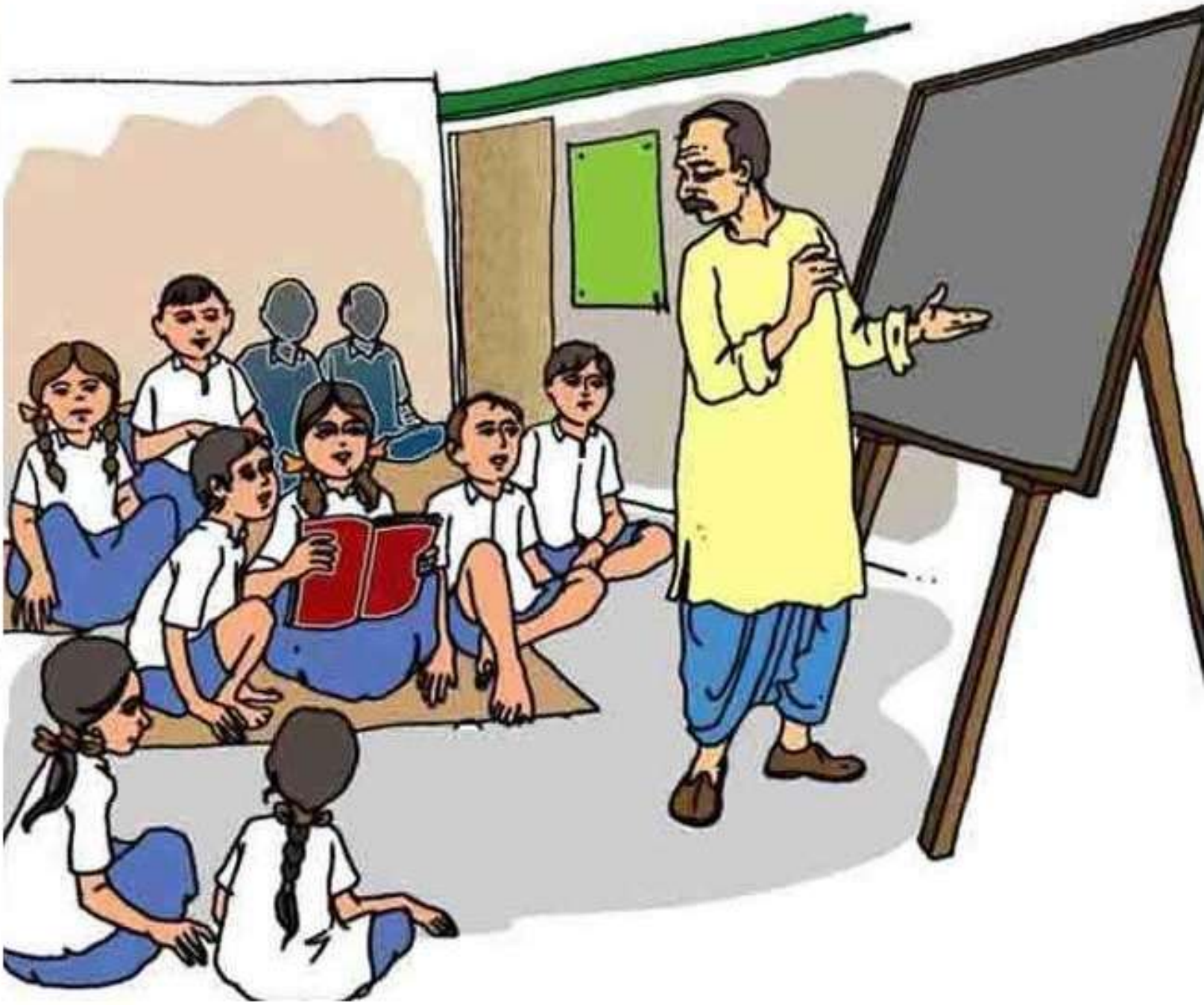

रघुवंश मिश्रा

आलोक प्रकाशन

सात कालखंड

रघुवंश मिश्रा

C- 2018 रघुवंश मिश्रा

आलोक प्रकाशन

<u>जिम्मेदारियों को समझें</u>

प्रिय शिक्षक साथी,

इस संसार में ऐसा कौन इन्सान होगा जो सुख के दो पल की लालसा नही रखता यह बात अलग हैं कि हर इन्सान के लिए सुख के मायने और परिस्थितियां अलग-अलग हो सकती हैं। किसी के लिए किसी परिस्थिति में जो सुख हैं वही दूसरे के लिए दुःख होता हैं। किसी को अच्छा खाने, सोने, घूमने-फिरने, पढ़ने-लिखने में सुख मिलता है तो किसी को अपना कर्तव्य निष्ठा के साथ पूर्ण करने में । चाहे इसके लिए स्थिति व परिस्थिति कितनी ही कष्टदायक क्यों न हो।

स्वस्थ मनोरंजन भी हमारे जीवन के सुख का एक प्रमुख हिस्सा हैं और मनोरंजन के साधन व तरीके भी अनेक हैं जिसका व्यक्ति अपने अनुकूल उपयोग करता है। पर यही साधन व तरीके हमारे कर्तव्य के मार्ग का रोड़ा बन जाएं, तब क्या होगा? निश्चित रुप से ऐसे में यह हमारे सम्मुख न केवल हास्यापद परिस्थिति उत्पन्न करेगी अपितु हमें अपने जिम्मेंदारियों के निर्वहन से विमुख भी करती जाएगी। अतः हमें अपने जीवन में सुख के अनके साधनों व प्रकारों का उपयोग करना चाहिए, लेकिन यह ध्यान मे रखते हुए कि यह हमारे जिम्मेदारी निर्वहन में बाधक न बनें।

मेरी यह पुस्तक “सात कालखंड” इसी प्रकार के व्दंद से जुझते हुए लोगो की मानसिक स्थिति का चित्रण करती हैं। इसमे उन परिस्थितियों का विस्तार से उल्लेख किया गया हैं जिसमें लोग गपशप करते हुए अपनी जिम्मेंदारियों के निर्वहन में चूक करते है।

आशा है यह पुस्तक आप लोगो को पसन्द आएगी।

धन्यवाद ।

रघुवंश मिश्रा
उ० वर्ग शिक्षक
टेंगनमाड़ा

प्रथम कालखण्ड

शहर से लगभग 60 कि.मी. दूर जामनगर गांव स्थित है। इस गांव में पूर्व मा.शाला स्तर तक के स्कूल हैं, जहां गांव के करीब 100 बच्चे पढ़ते हैं। स्कूल में प्रधान पाठक सहित चार शिक्षक जिनमें दो पुरुष श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्रा व श्री व्दारिका प्रसाद देवांगन तथा दो महिलायें श्रीमती राखी लहरे व कु. पूनम चक्रवर्ती पदस्थ है। ये सभी शिक्षक शहर से ट्रेन व्दारा यहां पढ़ाने आते हैं और फिर शाम को चले जाते हैं। प्रधान पाठक श्री मिश्राजी व्दारा कई बार अपने स्टाफ के शिक्षकों से कहा जा चुका था कि सभी यहीं पर मुख्यालय बनाकर रहें, लेकिन सब के सब की अपनी अपनी समस्या थी और हां रहेंगे, के सिवाय कोई दूसरा विकल्प उत्तर देने के लिये किसी के पास नहीं था।

आज यहां आने वाली ट्रेन थोड़ी विलम्ब से आई थी। इस कारण प्लेटफार्म पर गाड़ी के रुकते ही सब को हड़बड़ी थी कि किसी भी स्थिति में स्कूल 10 बजे के पहले पहुंचना है, टेबलेट में उपस्थिति जो दर्ज करना है। बिना किसी को कुछ बोले सभी लगभग दौड़ते हुये अंदाज में ही स्कूल की ओर बढ़ने लगे। इधर स्कूल आने में शिक्षकों को देर होते देखकर स्कूल के चपरासी श्री रामप्रसाद कष्यप ने प्रार्थना की घंटी बजा दी। बच्चे अपनी कक्षा के अनुसार पंक्ति में प्रार्थना के लिये खड़े हो रहे थे। इसी बीच शिक्षक पहुंचे और स्टाफ रूम में जाने के पहले सीधा प्रार्थना में खड़े हो गये। प्रार्थना के बाद बच्चे अपने अपने कक्षाओं में जाकर बैठे और शिक्षक स्टाफ रूम आकर अपनी कुर्सियों पर। टेबलेट बाहर निकाला गया और सभी क्रम से अपना अपना अंगूठा लगाकर उपस्थिति दर्ज कराये। चौथे शिक्षक की उपस्थिति दर्ज होते होते दस बजकर दस मिनट हो चुका था। चपरासी ने कक्षा अध्यापन हेतु निर्धारित प्रथम कालखण्ड की घंटी बजाई और शिक्षक अपने अपने निर्धारित

कक्षाओं में जाने के लिये आवश्यक तैयारी के साथ अपनी कुर्सी से उठने लगे। कुर्सी से उठते उठते लहरे मैडम प्रधान पाठक मिश्रा सर से बोलीं - सर ऐसे ही हड़बड़ी को देखकर कभी कभी मैं सोंचती हूं कि आप सही कहते हैं। देवांगन सर जो अपनी कक्षा की ओर जा ही रहे थे, ने रुकते हुये कहा - मैडम- मिश्रा सर जी कौन सी बात सही कहते हैं?

यही सर कि हमें यहां मुख्यालय बनाकर रहना शुरू कर देना चाहिये- लहरे मैडम बोली।

चक्रवर्ती मैडम जो कि अपने कक्षा की ओर जाने के लिये स्टाफ रूम से बाहर निकल चुकी थी, पुनः कमरे के अंदर आते हुये बोली - देवांगन सर और जानते हैं आज मेरे घर में क्या हुआ?

देवांगन सर- क्या हुआ मैडम?

तुर्वेदी मैडम- अपने कुर्सी के नजदीक आते हुये बोली - सर, आज ही मेरे पापा बोल रहे थे कि बेटी यह रोज-रोज का आना-जाना बंद करो और वहीं अच्छा सा मकान देखकर रहना शुरू करो। रोज-रोज के आने-जाने में शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की परेशानियां होती है। रहने से कम से कम इन दिक्कतों से बच जाओगी और उसका उपयोग अपने स्वयं की पढ़ाई लिखाई और बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में कर सकोगी।

तुर्वेदी मैडम की बात सुनकर अपनी कुर्सी पर पुनः बैठते हुये लहरे मैडम बोली- अरे मैडम। तुम अकेली हो। यहां रहो या वहां तुम्हें कोई विशेष फर्क नहीं पड़ने वाला है। दिक्कत तो हम जैसे शादी शुदा लोगों को है न। उतना बड़ा जाला-माला जो शहर में बना है, उसे छोड़कर, तोड़कर यहां कैसे आकर रह सकते हैं। तुम तो जानती ही हो, मेरा प्रकाश इस साल कक्षा आठवीं और आकाश कक्षा बारहवीं में है। दोनों

कोचिंग कर रहे हैं और सबसे बड़ी बात उनके पापा की देखभाल कौन करेगा। सच कहती हूं मैडम बच्चे बड़े हो जायेंगे न तब मैं एक दिन भी शहर से यहां आना जाना नहीं करूंगी। कभी कभी जब देर होती है तब मन थक जाता है और मन की पीड़ा बाहर आ जाती है। इसी कारण मिश्रा सर जी से बोली- कि सर आप सही कहते हैं? क्यों देवांगन सर, आप इस बारे में क्या विचार रखते हैं?

देवांगन सर जो इन दोनों की बात सुनकर स्टाफ रूम में ही रुक गया था उन दोनों को अपनी-अपनी कुर्सी पर बैठे देखकर अपनी कुर्सी खींचकर बैठने के बाद बोला - मैडम मैं इस बात को नहीं मानता कि बच्चों की पढ़ाई के कारण मैं या आप यहां नहीं रहते। अब मेरा ही ले लो। जब मेरे बच्चे छोटे थे, तब मैं भी यही सोंचता था कि बच्चे कितना जल्दी बड़े हों और उन्हें बोर्डिंग में भेजकर, आराम से दोनों पति पत्नि यहां रहेंगे। पर ऐसा केवल सोचना बस रहा, व्यवहार में परिणित नहीं हो सका। आज बच्चे पढ़ लिख गये तो मन में आता है कि इनकी शादी विवाह करके, घर गृहस्थी बसा के फुर्सत हो जायें फिर वहां जाकर रहना शुरू करेंगे और मैडम मैं दावे के साथ कहता हूं कि अगर बच्चे अपने घर परिवार संभालने भी लगेंगे, तब भी मैं यहां आकर रहना शुरू नहीं कर सकूंगा और उसका कारण भी मैं जानता हूं और वह कारण है केवल अपने हित को देखना।

मिश्रा सर जी जो अपने स्टाफ के शिक्षकों की बातें अपने कुर्सी पर बैठा ध्यान से सुन रहा था, ने कहा- देवांगन सर जी। आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। पर जरा सोचिये हम सब कुछ जान और समझ रहे हैं उसके बाद भी ऐसा कर रहे हैं।

मिश्राजी के बात को आगे बढ़ाते हुये रेखा मैडम बोली- तो करें तो क्या करें सर। आज मैं समझती हूं, हमारे जैसे सभी शिक्षकों का मन दुविधा के चक्र में फंसा हुआ है। एक तरफ हमारे पास आदर्शवाद का रास्ता है, जिसमें चलकर हम अपने बच्चों

को साथ लेकर अपने नौकरी वाले जगह पर ही रहें, वहीं उनका पालन पोषण और शिक्षा पूर्ण करें तो दूसरी ओर व्यवहारिक परिस्थिति है, जिसका पालन या जिस पर हम लोग आज चल रहे हैं।

चतुर्वेदी मैडम जिसे चुप बैठे करीब 15 मिनट हो गया था लहरे मैडम के चुप होते ही तुरंत बोली- पर लहरे मैडम मेरे लिये भी तो कोई उपाय बतलाईये। आप नहीं जानती मैडम मेरे पापा कितने आदर्शवादी हैं। जानते हैं, पापा जब यह कहते हैं कि वहीं रहना शुरू करो, तब इस बात में उनका मेरे शारीरिक और मानसिक थकान की चिन्ता कम और आदर्शवादिता के भाव ही ज्यादा छिपा होता है। क्योंकि मैं अपने पापा को कई बार कहते सुनी हूं कि आज जो हम गुणवत्ता में पिछड़ रहे हैं उसका सबसे बड़ा कारण शिक्षकों का अपने मुख्यालय पर नहीं रहना है।

चतुर्वेदी मैडम की बातों को सुनने के बाद लहरे मैडम हंसते हुये बोली- मैडम मैं आपके लिये कोई स्थायी उपाय नहीं बतला सकती क्योंकि अभी आप खुद स्थायी नहीं हो।

लहरे मैडम के कहने के भावों को समझते हुये चतुर्वेदी मैडम बोली- हां मैडम। आप सही कह रही हैं। इसी कारण मैं भी पापा के बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देती। पता नहीं होने वाला कैसा हो। अगर आदर्शवादी हुये तो 60 कि.मी. क्या दस कि.मी. भी दूर रहेगा, तब भी मुख्यालय में ही रहने को कहेंगे और अगर व्यावहारिक हुये तो न चाहते हुये भी 60 क्या 100 कि.मी. दूर भी आना-जाना करना पड़ेगा। इसीलिये मैं सोंचती हूं कि शादी के बाद ही इस पर स्थायी रूप से निर्णय लूंगी।

चतुर्वेदी मैडम के चुप होने पर मिश्रा सर जी सभी को संबोधित करते हुये बोले- पर क्या आप ऐसा करना अच्छा मानते हैं?

देवांगन सर- छोड़िये न सर। हमारे अच्छा या खराब मानने से क्या होता है? जैसा सब कर रहे हैं वैसा हम भी कर रहे हैं और जब सभी लोग एक जैसे करने वाले हों, तब इसका निर्णय करने वाला कौन होगा कि हम अच्छा कर रहे हैं या खराब।

देवांगन सर की बात मिश्राजी को थोड़ा बुरा लगा। इसी कारण थोड़ा व्यंग्यात्मक लहजे में कहा- जमीर भी कोई चीज होता है देवांगन जी।

मिश्रा जी की बातों में छिपी गहराई को समझने के बाद थोड़ा झेंपते हुये देवांगन सर ने कहा- मेरा वैसा मतलब नहीं था सर जैसा आप ने समझा। मैं तो केवल यह कहना चाह रहा था कि आजकल के अधिकांश लोग केवल अपना ही हित देखकर काम कर रहे हैं और समय के चलन के विपरीत चलने की हिम्मत बहुत कम लोग कर पाते हैं। देवांगन सर की स्वीकारोक्ति सुनकर मुस्कुराते हुये मिश्रा जी बोले- यही तो मैं चाहता हूं देवांगन जी कि यह पहल मेरे स्टाफ की तरफ से हो।

लहरे मैंडम जो काफी देर से अन्य शिक्षकों की बातें सुन रही थी, मिश्रा जी की बातों में फंसते देखकर बोली- सर मेरा तो यह विचार है कि कोई कहीं से भी आये जाये, इससे किसी को मतलब नहीं होना चाहिये। मतलब केवल इस बात पर होना चाहिये कि आने के बाद हम अपने कर्तव्यों का निर्वहन कितने लगन व ईमानदारी से करते हैं।

मिश्रा जी- लहरे मैडम। मैं आपकी बातों से पूर्ण रूप से सहमत हूं। पर सोंचने वाली बात यह है कि क्या ऐसा भी हो पाता है। जहां तक मैंने अपनी इस 36 वर्ष की सेवा अवधि में यह अनुभव किया है कि जब हम किसी एक चीज पर गलत साबित होने लगते हैं, तब उसके विकल्प के रूप मे कोई दूसरी बात खड़ा कर देते हैं और अंत में क्या होता है। न इसमें खरा उतर पाते और न उसमें। कैसे देवांगन जी।

देवांगन सर- पर सर क्या आपने कभी यह जानने का प्रयास किया है कि दूसरे विकल्प की आवश्यकता ही क्यों पड़ती है?

मिश्रा जी - आपने कुछ सोचा होगा तो हम सबको भी बतला दीजिये देवांगन सर।

देवांगन सर- अत्यधिक आाशा और जिम्मेदारियां का दबाव और क्या सर।

मिश्रा जी- और हम इसे पूरा क्यों नहीं कर पाते।

मिश्रा जी के प्रश्न पर देवांगन सर को चुप बैठा देखकर चतुर्वेदी मैडम बोली- छोड़िये न सर। ऐसे बात करते रहेंगे, तब तो पूरा दिन निकल जायेगी एक बार आप कुछ कहेंगे, फिर उससे आगे मैं कुछ बोलूंगी, लहरे मैडम बोलेगी और देवांगन सर जी बोलेंगे। कहते सुनते समय भी निकल जायेगी।

चतुर्वेदी मैडम के चुप होने पर मिश्रा जी बोले- यही तो मैं कहना चाह रहा हूं पूनम। लोग क्या करते हैं, क्या कहते हैं, इसकी परवाह किये बिना हमको अपने कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिये। इसी से कुछ परिणाम नजर आयेगा। नही तो लोगों की परवाह करने में ध्यान दिये तो जो समय हमारे मुट्ठी में हैं वह भी रेत की ढेर की तरह फिसल जायेगी।

मिश्रा जी के बातों का कुछ जवाब दिये बिना चतुर्वेदी मैडम अपनी कुर्सी से उठने लगी। उसे उठते देखकर देवांगन सर ने पूछा अरे मैडम। कहां जाने लगी।

चतुर्वेदी मैडम- अपने कक्षा में सर।

देवांगन सर- मैडम अब दो मिनट के लिये कक्षा में जाकर क्या करेंगी? आपके बाद उस कक्षा में मेरा पिरिएड है।

चतुर्वेदी मैडम- देखिये न सर बातचीत में पता ही नहीं चला कि कब 40 मिनट का समय पूरा हो गया।

देवांगन सर और चतुर्वेदी मैडम बात कर रहे थे उसी समय चपरासी ने व्दितीय कालखण्ड के लिये दो घंटी बजाकर संकेत दिया। देवांगन सर, लहरे मैडम और चतुर्वेदी मैडम अपने अपने कक्षा में जाने की तैयारी करने लगे।

दूसरा कालखण्ड

दूसरे कालखण्ड की घंटी लगने पर तीनों अपनी-अपनी कक्षाओ में जा ही रहे थे कि लहरे मैडम की बैग में रखे हुए मोबाईल की घंटी बजी। लहरे मैडम बैग के नजदीक आकर मोबाईल निकालकर हेलो-हेलो बोली पर उधर से कोई आवाज नही आया। लहरे मैडम झल्लाते हुए फोन को हाथ पर रखे अपने कुर्सी पर बैठते हुए बोली - मैं इस मोबाईल से परेशान हो गयी हूँ लगता हैं इस मोबाईल सेट में ही कुछ खराबी है। जब कभी फोन उठाओं तुरंत कट जाता हैं और बात नही होने के कारण मन दिन भर अशांत रहता हैं। देवांगन सर और चर्तुवेदी मैडम अपनी-अपनी कक्षाओ में जाइए। मैं थोड़ी देर बाद आती हूँ।

उनकी बातों को अनसुनी करते हुये चतुर्वेदी मैडम जो लहरे मैडम के बगल में बैठती थी, अपने कुर्सी पर जाकर बैठते हुये कहती है- लहरे मैडम दिखलाओ तो तुम्हारे मोबाईल सेट को। अभी बोल रही थी न कि सेट की खराबी हो सकती है। थोड़ा मैं भी तो देखूं क्या खराबी आ रही है।

इससे पहले की लहरे मैडम, चतुर्वेदी मैडक को अपना मोबाईल सेट देती देवांगन सर लहरे मैडम के हाथ से मोबाईल लेकर अपने कुर्सी पर बैठने के बाद देखते हुये बोला- मैडम पर मुझे तो मोबाईल सेट में कुछ भी खराबी नजर नहीं आ रही है। हां अगर साफ्टवेयर में कुछ खराबी आ गई हो तो अलग बात है। इसके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। शायद चतुर्वेदी मैडम को कुछ मालूम हो। इसी कारण वह आपसे मोबाईल देखने के लिये मांग रही थी। यह कहते हुये मोबाईल चतुर्वेदी मैडम की ओर बढ़ा देता है।

देवांगन सर से मोबाईल अपने हाथ में लेते हुये चतुर्वेदी मैडम बोली- नहीं सर मुझे भी कोई खास जानकारी नहीं है। पर हां हल्का फुल्का खराबी हो तो उसे समझ जाती हूं।

देवांगन सर ने पूछा- कहीं से कोई प्रशिक्षण ली हो मैडम।

चतुर्वेदी मैडम- नहीं सर। ओ घर में क्या है, मेरा भाई मोबाईल खोलकर कुछ न कुछ करते रहता है और बीच बीच में बतलाते भी रहता है कि पूनम जब ऐसा हो जाये तो इसको ऐसा करना, कभी आन आफ करके देखना और कभी बैटरी को निकालकर उसे अच्छा से कपड़ा में रगड़कर उसके जगह में जोर से फूंक मारकर लगा देना और इन्हीं में से कोई न कोई तरीके से मैंने मोबाईल को फिर से काम करते देखी है। हां मेरा भाई यह भी बतला रहा था कि कभी कभी कोई एप गलती से दब जाता है, जिसके कारण कई अनावश्यक फंक्शन शुरू हो जाता है और आवश्यक फंक्शन रुक जाता है।

मोबाईल सैट को खोलकर अपने भाई के बतलाये सारे नुस्खे को आजमाकर आन करके लहरे मैडम को देते हुये बोली- यह लो मैडम। आपका फोन ठीक हो गया। अब अगर कहीं से काल आयेगी तो कटना नहीं चाहिये। ऐसा मेरा विश्वास है।

चतुर्वेदी मैडम से मोबाईल अपने हाथ में लेते हुये लहरे मैडम बोली बहुत-बहुत धन्यवाद मैडम।

अरे मैडम! इसमें धन्यवाद की क्या बात है। हम लोग एक स्टाफ में काम करते हैं, एक साथ रहते हैं, समय बिताते हैं और अगर हम ही एक दूसरे के बने बिगड़े में काम नहीं आयेंगे तो फिर कौन आयेगा- चतुर्वेदी मैडम बोली।

चतुर्वेदी मैडम को बीच में रोकते हुये देवांगन सर बोला- मैडम आपने उस समस्या का हल तो बतला दिया जो मोबाईल सेट से संबंधित था। पर मान लो समस्या सिम से संबंधित उत्पन्न हो जाये तो फिर लहरे मैडम क्या करेगी? चतुर्वेदी मैडम थोड़ा आश्चर्य दिखाते हुये बोली- सिम से संबंधित कैसी समस्या सर?

अरे यही मैडम हम देखते हैं कि किसी जगह पर आइडिया का कनेक्शन ठीक रहता है, तो किसी जगह एयरटेल, बी.एस.एन.एल. और डोकोमो का देवांगन सर ने कहा।

अरे हां सर आपने ठीक कहा। मेरी तो इस ओर ध्यान ही नहीं गई। मैं तो भाई इन्हीं सारी समस्याओं से छुटकारा पाने के लिये जियो का सिम उपयोग में लाती हूं और जहां जहां मुझे आना जाना होता है उन सभी जगहों में यह सिम काम करती है। चतुर्वेदी मैडम बोली। पर मैडम मैं तो सुनी हूं कि जियो सिम लगाने से मोबाईल सैट खराब हो जाता है और फिर उसमें कोई दूसरे का सिम भी काम नहीं करता - लहरे मैडम बोली।

चतुर्वेदी मैडम- अरे यह सब अफवाह है मैडम। अगर ऐसा होता तो कोई भी जिओ का सिम उपयोग में नहीं लाते।

देवांगन सर- अरे मैडम आजकल तो सभी हैंडसेट सस्ती हो गई है और फिर हर सैट डबल सिम वाला भी आ रहा है। दो सेट रखो और दोनों में डबल सिम जो अलग अलग कंपनी का हो लगा के रखो। फिर चाहे वह जंगल हो या पहाड़ किसी न किसी का तो कनेक्शन काम करेगा हीं।

लहरे मैडम मुस्कुराते हुये बोली- और चार चार सिम का खर्चा भी तो लगेगा सर।

देवांगन सर- आप भी मैडम कहां की बात कर रहे हैं। दोनो नौकरी कर रहे हैं, उसके बाद भी 50-100 रूपये के लिये रोना रो रही हो। एक बार चतुर्वेदी मैडम बोलती तो बात भी समझ में आता।

लहरे मैडम- आप क्या जानेंगे सर। देखने वालों के लिये हम दोनों नौकरी कर रहे हैं, पर उसी के साथ खर्चा भी तो बढ़ा हुआ है। बच्चों का कोचिंग फीस, घर का ई.एम.आई., आना-जाना, घर-गृहस्थी में ही सब पैसा खप जाती है। चतुर्वेदी मैडम की बात अलग है। अभी वह अकेली है। जैसा चाहे अपना पैसा खर्च कर सकती है।

देवांगन सर- लहरे मैडम इसमें कौन सा हजार दो हजार खर्च हो जायेगा। भाई सीधी सी बात है, अभी दो सीम में 400-500 खर्च करती होगी। जब चार सिम रखना शुरू करोगी तो 100-100 रूपये का चारों में खर्च कर लेना। आखिर मतलब तो एक ही हुआ न।

लहरे मैडम- ठीक है सर। इस महीने के तनखे में देखती हूं। अगर समय पर आ गया तो?

लहरे मैडम की बात सुनकर देवांगन सर और चतुर्वेदी मैडम अपनी हंसी नहीं रोक पाये। उन्हें हंसते देख कर लहरे मैडम भी हंसने लगती है।

अब तक मिश्रा सर जी अपना कार्यालयीन कार्य पूरा कर चुका था। तीनों की हंसी सुनकर मिश्रा जी ने कहा तो आप लोगों की ‘‘मोबाईलनामा’’ खतम हो गया। मिश्रा जी के बात का जवाब देते हुये लहरे मैडम बोली- सर आप हमारी बातों को सुन रहे थे? मिश्रा सर- हां। काम भी कर रहा था और बीच बीच में ध्यान आप लोगों की बातों की ओर भी चला जाता था। लहरे मैडम- माफ करना सर। आपको डिस्टर्ब तो नहीं हुआ?

मिश्रा सर- मैडम। कहीं भी जब कोई एक व्यक्ति काम करता रहे और दूसरे अन्य लोग वहां पर बातचीत करें तो डिस्टर्ब होना तो स्वाभाविक है न।

देवांगन सर- पर क्या करें सर। हम लोगों का ईरादा नहीं था कि यहां बैठकर बात करें। पर एक जरूरी काल आया और बातचीत की दिशा ही बदल गई।

मिश्रा सर- देवांगन जी। जरूरी काल। कैसा और किसका जरूरी काल। मैंने तो किसी को बात करते नहीं सुना। देवांगन सर- ओ क्या है सर। कनेक्शन नही मिलने के कारण फोन कट गया। मिश्रा सर- और देवांगन जी। पुनः काल आने की प्रतीक्षा में लगभग 35 मिनट व्यर्थ चला गया।

देवांगन सर- पर मन कहां मानता है सर। आपको याद है पिछली बार ऐसा ही काल मुझे आया था और मैं काल अटैण्ड नहीं कर पाया। इस पर अधिकारियों के व्दारा मुझे कितना सुनाया गया था।

मिश्रा सर- इसीलिये तो उच्च कार्यालय व्दारा निर्देश भी जारी हुआ है कि कोई भी शिक्षक स्कूल समय में मोबाईल पर किसी भी प्रकार की गतिविधियों में लिप्त नहीं होंगे। कहने का मतलब है कि एक बार स्कूल आ गये तो अपना मोबाईल बंद करके रख दो। फिर जब कभी खाली समय मिले तो चेक कर लो कि कहीं कोई आवश्यक काल या मैसेज है कि नहीं। मिश्रा सर और देवांगन सर दोनों अपनी अपनी बातों के पक्ष में तर्क दे रहे थे। उन दोनों को बातचीत में व्यस्त देखकर चतुर्वेदी मैडम अपने कुर्सी से उठकर टेबल के ऊपर रखे किताब उठाने लगी? मैडम को किताब उठाते देखकर देवांगन सर ने पूछा अरे चतुर्वेदी मैडम कहां जाने लगी?

चतुर्वेदी मैडम- कक्षा में जा रही हूं सर।

जैसे ही चतुर्वेदी मैडम ने अपनी बात समाप्त की वैसे ही लहरे मैडम के फोन की घंटी बजने लगी। फोन की घंटी सुनकर चतुर्वेदी मैडम किताब को फिर से टेबल पर रखते हुये बोली- अरे लहरे मैडम। जल्दी से बाहर निकलो और बात कर लो। नहीं तो कटने पर पता नहीं और कितने समय तक प्रतीक्षा करना पड़े।

इस बीच लहरे मैडम फोन लेकर बाहर आई। मैडम के साथ साथ चतुर्वेदी मैडम और देवांगन सर भी बाहर निकले। तीनों जिस गति से बाहर निकले थे, उसी गति से बाहर से अंदर की ओर हंसते हुये आये। तीनों को स्टाफ रूम में हंसते देखकर मिश्रा सर जी ने पूछा- क्यों मैडम। बात हो गई। किसका काल था? लहरे मैडम- ओ किसी का नहीं सर। रांग नंबर था।

मिश्रा सर जी मैडम की बात सुनकर अपने कुर्सी पर एकदम शांत बैठा रह गया। तीनों शिक्षक अब भी एक दूसरे को देखकर हल्के-हल्के मुस्कुरा रहे थे। चपरासी लघु अवकाश की घंटी बजाता है। बच्चे बाहर निकलते हैं और सभी शिक्षकगण अपने अपने अगले कालखण्ड की तैयारी में लग जाते हैं।

तीसरा कालखण्ड

दस मिनट के लघु अवकाश के बाद चपरासी रामप्रसाद तीन घंटी बजाकर तीसरे कालखण्ड के आरंभ की सूचना देता है। बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओं में तृतीय कालखण्ड में पढ़ाये जाने वाले विषय की पुस्तकें खोलकर शिक्षकों के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इधर स्टाफ रूम में शिक्षक अपने कक्षा में जाने की तैयारी में लगे हैं। प्रधान पाठक मिश्राजी का पिरिएड अभी कक्षा आठवीं में है। वह विषय की किताब लेकर बिना विलम्ब किये सीधा कक्षा में जाकर पढ़ाना आरंभ करते हैं। लहरे मैडम का अभी किसी भी कक्षा में पिरिएड नहीं था। इस कारण वह अपनी जगह पर ही बैठे बैठे चौथे कालखण्ड में पढ़ाये जाने वाली विषय की तैयारी में लग जाती है। चतुर्वेदी मैडम को कक्षा छठवीं और देवांगन सर को कक्षा सातवीं में जाना था। दोनों स्टाफ रूम से निकलकर कक्षा में घुसने ही वालें थे कि कक्षा सातवीं के दो छात्र राजेश और मोहन दोनों लड़ते हुये बाहर की ओर आ रहे थे कि देवांगन सर से टकरा गये। दोनों को लड़ने से रोककर डांटते हुये देवांगन सर ने कहा क्यों मैं तुम लोगों से कितनी बार बोल चुका हूं कि यह स्कूल है। कोई लड़ने का अखाड़ा नहीं। इससे पहले की दोनों बच्चे कुछ बोलते, चतुर्वेदी मैडम जो उन दोनों को लड़ते देखकर वहीं रूक गई थी, बोली- देवांगन सर। इन लड़कों की तो यह आदत ही बन गई है। जब देखो तब लड़ते रहते हैं। अभी परसों मैं कक्षा में पढ़ा रही थी, तो ये दोनों मेंरे सामने ही कक्षा में लड़ना शुरू कर दिये। इन लोगों की इतनी हिम्मत बढ़ गई है। देवांगन सर मैं तो कहती हूं कि इन दोनों के पालकों को स्कूल में बुलाईये और इनकी सारी करस्तानियों को बतलाईये। तभी इन दोनों को कुछ समझ में आये तो आये नहीं तो मैं तो समझा समझाकर थक भी गई हूं, और परेशान भी हो गई हूं।

देवांगन सर और चतुर्वेदी मैडम की बातें अंदर स्टाफ रूम में बैठी लहरे मैडम सुन रही थी। जब उससे रहा नहीं गया तब जल्दी जल्दी बाहर निकलते हुये बोली - हां देवांगन सर। चतुर्वेदी मैडम सही बतला रही है। इन दोनों लड़कों को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कक्षा में पढ़ाई हो रही है कि नहीं। इन्हें तो बस दिनभर उधम मचाये रखना है। न खुद पढ़ते हैं और न दूसरे बच्चों को पढ़ने देते।

दोनो मैडम की बातों को सुनते हुये देवांगन सर लड़कों को अंदर स्टाफ रूम में आने का ईशारा करके अपने कुर्सी पर बैठ जाता है। पीछे पीछे दोनों मैडम भी आकर अपने अपने जगह पर बैठ जाते हैं और लड़के देवांगन सर के बगल में खड़े हो जाते हैं। लड़कों की ओर देखते हुये देवांगन सर पूछता है- क्यों किस बात पर लड़ना शुरू किये थे? शुरू से सच सच बतलाओ। अगर एक शब्द भी झूठ बोले तो समझ लेना।

देवांगन सर के कहने के बाद डरते हुये राजेश ने कहा सर मैं तो चुपचाप बैठकर अपना काम कर रहा था .....। इससे पहले की राजेश अपनी बात पूरी कर पाता बीच में ही चतुर्वेदी मैडम बोलने लगी- देखा। देखा सर। अभी आपने इन दोनों से क्या बोला कि सच सच बतलाना। झूठ नहीं बोलना है और शुरू से ही झूठ बोलना शुरू कर दिये। अकेले में जो कुछ करते हैं ओ तो करते है। यहां तीन तीन शिक्षकों के सामने भी झूठ बोल रहे हैं। अब आप ही देख लीजिये देवांगन सर इन लड़कों का क्या करना है। मुझे तो कुछ समझते ही नहीं।

चतुर्वेदी मैडम के बात पूरी होने के बाद देवांगन सर दूसरे लड़के मोहन को अपने नजदीक बुलाते हुये कहता है- क्यों मोहन तुम बतलाओ राजेश सच बोल रहा है कि नहीं।

मोहन- सर राजेश बैठकर अपना काम कर रहा था। उसी समय मैं.. मोहन अपनी बात पूरी कर रहा था उसी समय बीच में ही लहरे मैडम ने बोलना शुरू की - सर अब ये मोहन क्या बतलायेगा। दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। अभी हम लोगों को डिस्टर्ब करने के लिये आपस में लड़ पड़े और थोड़ी देर बाद ही फिर दोनों जिगरी दोस्त बनकर एक दूसरे के कंधे में हाथ डालकर घूमेंगे। पढना मत पड़े, सोंचकर दुनियाभर की नाटकबाजी करते हैं। जब तक इन दोनों को इनके पालकों के सामने बोलने के लिये नहीं कहेंगे तब तक इनके मुंह से सच की उम्मीद कम से कम मैं तो नहीं कर सकती देवांगन सर।

दोनों मैडम की बात सुनकर देवांगन सर गुस्से में बोले- क्यों तुम दोनो आये दिन यह क्या तमाशा मचाये रहते हो? अभी तक तो मैं यही समझ रहा था कि तुम दोनों केवल मेरे पिरिएड में ही बदमाशी करते हो। पर जैसा दोनों मैडम बतला रही है उससे तो लगता है कि तुम दोनों बदमाशी करने को अपना आदत बना लिये हो। बोलो इसकी तुम्हें क्या सजा मिलनी चाहियै।

देवांगन सर के हाव भाव को देखकर सहमते हुये राजेश और मोहन दोनों के मुंह से एक साथ निकला सर पहले हमारी बात ..... इससे पहले के दोनों अपनी बात पूरी कर पाते चतुर्वेदी मैडम बोली- यह क्या देवांगन सर। ऐसे में बच्चे थोडे सुधरेंगे। गलती करने वाले से ही आप पूछ रहे हैं कि उसे क्या सजा मिलनी चाहिये। भला आज तक किसी गलती करने वाले ने कहा है कि उसे यह सजा मिलनी चाहिये, जो ये दोनों कहेंगे। हां देवांगन सर। चतुर्वेदी मैडम बिल्कुल सही कह रही है। अभी कुछ ही दिनों पहले की बात है ओ कक्षा आठवीं में पढ़ने वाला लड़का दिनेश, रणजीत के कापी को फाड़ दिया। जब मैं उससे बोली की बतलाओ तुम्हारी इस गलती के लिये क्या सजा दूं। तो जानते है देवांगन सर उसने क्या कहा? उसने तपाक से बोल दिया कि मैडम आगे अब ऐसा गलती नहीं करूंगा। मैं

भी यह सोचकर मान गई कि चलो उसे गलती का एहसास हो गया और आगे से ऐसा नहीं करेगा। पर क्या अगले ही दिन उसने दूसरे लड़के की कापी फाड़कर फेंक भी दिया - लहरे मैडम अपना अनुभव बतलाते हुये बोली। फिर आपने क्या किया मैडम? देवांगन सर ने पूछा?

और करती क्या सर। अपने पूरे पिरिएड भर खड़ा रहने के लिये कही। जब पूरा पिरिएड खतम हो गया तब चेतावनी देते हुये बैठने के लिये बोली की अगर आगे फिर ऐसी गलती करोगे तो कक्षा के बाहर दिन भर खड़ा रहने की सजा दूंगी- लहरे मैडम बोली। देवांगन सर ने आगे बोलते हुये पूछा- तो इससे कुछ फर्क पड़ा मैडम?

लहरे मैडम बोली- कहां फर्क पड़ने वाला है देवांगन सर। आजकल के ऐसे बच्चे जो बदमाशी करने को अपना पेशा बना लिये है, चिकने घड़े के समान हो गये हैं। कितनो समझाओ कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। पहले कुछ दिन तो ठीक था। पर अभी-अभी फिर शिकायत आने लगी है। इसी कारण बोल रही हूं सर कि ऐसे सभी बच्चों के पालकों को बुलाकर उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत करा देते हैं। नहीं तो आखिरी में हम शिक्षक ही जिम्मेदार ठहराये जायेंगे।

लहरे मैडम के चुप होने पर चतुर्वेदी मैडम बोली- हां लहरे मैडम आप ओ बगल वाले गांव सुआनार मिडिल स्कूल की घटना के बारे में तो सुने ही होंगे न। दो बच्चों की लड़ाई पालकों की लड़ाई बन गई। बात पुलिस तक पहुंच गई और वहां के शिक्षक बेचारे गोवर्धन राठौर को सबसे कितना भला बुरा सुनना पड़ा।

देवांगन सर जो इस घटना के बारे में संयोगवश नहीं जानता था। अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिये पूछा- अरे मैडम वहां क्या हुआ था और मुझे इस बात की जानकारी कैसे नहीं है?

देवांगन सर की बात को आगे बढ़ाते हुये आश्चर्य के साथ चतुर्वेदी मैडम बोली- यह क्या कह रहे हैं देवांगन सर? सच में आपने आज तक उस घटना के बारे में किसी से नहीं सुना है, ताज्जुब हो रहा है सर। देवांगन सर बोले- अरे मैडम जानता तो आपसे इस तरह थोड़े पूछता।

चतुर्वेदी मैडम- बात कुछ नहीं थी देवांगन सर। जैसे ये दोनों लड़के लड़ रहे थे, वैसे ही वहां भी दो लड़कों के बीच लड़ाई हुई थी। यह तो हम लोगों की सौभाग्य है कि हम सभी वहीं पर थे और बात आगे नहीं बढ़ी। वहां उस दिन गोवर्धन सर स्टाफ रूम में बैठकर जानकारी बना रहा था। इतने में दोनों लड़के लड़े और बात इतनी बढ़ी की पुलिस केस बन गया। बस इसके बाद जो भी आता सब गोवर्धन सर को सुना के जाते कि कैसे शिक्षक हो, जो बच्चों को नियंत्रण में नही कर सकते।

सुआनार गांव की घटना को जानकर देवांगन सर आग बबूला होते हुये दोनों लड़कों की ओर देखते हुये कहा- तुम दोनो सुन रहे हो न मैडम क्या बतला रही है? गलती करो तुम लोग और सजा मिले शिक्षक को। यह वहां हो गया तो हो गया। ऐसी बात मैं अपने रहते यहां नहीं होने दुंगा। तुम दोनो कान खोलकर सुन लो। देवांगन सर गुस्से में दोनों लड़कों से इतना जोर से बोल रहे थे कि उसकी आवाज कक्षा आठवीं में पिरिएड ले रहे मिश्रा सर जी के कानों तक पहुंच गई। यह सोंचकर की देवांगन सर की किसके साथ बहस हो रही है, घड़ी पर नजर डालते हुये कक्षा से निकलकर सीधा स्टाफ रूम की ओर बढ़े। पिरिएड समाप्त होने में केवल पांच मिनट ही षेश था। स्टाफ रूम में आकर दोनों लड़कों को खड़े देखकर मिश्रा जी ने पूछा- क्यों देवांगन सर क्या हुआ? किससे जोर जोर से बात कर रहे थे और आप लोग कक्षा से कितने समय बाहर आये पता ही नहीं चला।

मिश्रा जी के प्रश्नों की बौछार सुनकर थोड़ा शांत होतें हुये देवांगन सर ने कहा- अरे इन लड़कों के कारण पिरिएड ही नहीं ले पाये सर। तब से पूछ रहे हैं कि आपस में क्यों लड़े? कोई जवाब ही नहीं दे रहे हैं।

बात की संवेदनशीलता को समझते हुये मिश्रा सर ने राजेश और मोहन से प्यार से पूछा - बतलाओ बेटा आपस में क्यों लड़ रहे थे और जब सरजी और मैडम जी पूछ रहे है तो कारण क्यों नहीं बतला रहे हो?

मोहन- ओ सर। राजेश चुपचाप बैठा अपना काम कर रहा था, उसी समय मैं उसके पास गया और बोला यार राजेश इस साल 26 जनवरी के दिन हम लोग एक नाटक करेंगे और उस नाटक में दो भाईयों के बीच लड़ाई होने पर छोटा भाई बड़े भाई को धक्का मारकर घर से निकालेगा। बस सर पिरिएड खाली था और हम वहीं उसी समय मजाक मजाक में अभिनय करने लगे। मैं छोटा भाई बनकर राजेश को धक्का मारकर घर से निकाल रहा था। उसी समय सर जी आ गये और हम दोनों को डांटते हुये यहां ले आये।

मोहन की बात सुनकर देवांगन सर, लहरे मैडम या चतुर्वेदी मैडम में से कोई भी कुछ बोलता इससे पहले ही मिश्रा जी ने कहा- आप तीनों सुने मोहन क्या बतला रहा है?

देवांगन सर कुछ बोलने ही वाले थे कि उसी समय चपरासी रामप्रसाद चार घंटी बजाकर चौथे कालखण्ड के आरंभ होने की सूचना देता है। पिरिण्ड की घंटी सुनने के बाद बिना एक पल देरी किये तीनों कुर्सी से उठकर अपनी अपनी कक्षाओं की ओर जाने के लिये निकलते हैं।

चौथा कालखण्ड

प्रधानपाठक श्री मिश्रा सर जी का अभी कोई पिरिएड नहीं होने के कारण फिर से पुराने कार्यों को निपटाने में व्यस्त हो गये। उधर देवांगन सर लहरे मैडम और चतुर्वेदी मैडम कक्षा में जाने के लिये स्टाफ रूम से निकलकर बरामदे पर आ गये थे। उसी समय उन्हें ग्राउण्ड पर मोटरसायकल रूकने की आवाज सुनाई दी। उत्सुकतावश बाहर झांककर देखे तो उन्हें संकुल समन्वयक श्री साहू जी मोटरसायकल को स्टैण्ड करते दिखाई दिये। साहू जी को आते देखकर चतुर्वेदी मैडम, लहरे मैडम से बोली- ऊँ आ गया। इस सर का तो कोई और काम नहीं है। हफ्ते में हमारे स्कूल कम से कम दो बार तो आ ही जाते हैं।

लहरे मैडम- अरे मैडम। ओ भी बेचारा क्या करे। ड्यूटी जो करना है। संकुल से हमारा स्कूल ही सबसे नजदीक पड़ता है। मन में आता होगा चलो वहीं जाकर ड्यूटी की खानापूर्ति कर लेते हैं। पास खड़ा ही देवांगन सर मैडम की बात सुनकर बोला- मैडम आप जो कह रहे हैं वह सही तो है ही। इसके अतिरिक्त अभी कुछ दिनों पहले के पेपर में मैने पढ़ा था कि प्रत्येक संकुल में एक पूर्व माध्य.शाला को आदर्श शाला के रूप में विकसित किया जायेगा। हो सकता है कि साहू जी उसी सिलसिले में बात करने आये हों। चतुर्वेदी मैडम- तो साहूजी को हमारा स्कूल ही मिला है आदर्श शाला बनाने के लिये। हमारा स्कूल तो आदर्श शाला है ही। उनको ऐसे स्कूल का चयन करना था जिसे सचमुच आदर्श शाला बनाने की जरूरत है।

देवांगन सर- पेपर में जो मापदंड दिया था उसके अनुसार ऐसे स्कूल में प्रधान पाठक सहित चार शिक्षक अनिवार्य रूप से हों और जहां तक मेरी जानकारी है हमारे स्कूल को छोड़कर संकुल में ऐसा और कोई स्कूल नहीं है। लहरे मैडम - तो देवांगन सर हमारे स्कूल में चार शिक्षकों के होने को मैं सजा समझूं या ईनाम।

चतुर्वेदी मैडम- अरे मैडम। आप तो जानती है कि हमारा समाज ईनाम देने के मामले में कितना कंजूसी दिखाता है और जहां तक सजा की बात है तो तत्काल सुना देता है। आप ओ कथन तो सुने होंगे न वकील न दलील।

देवांगन सर- पर मैडम इसमें हमें कौन सी सजा मिल सकती है अैर सजा देने वाला कौन हो सकता है?

चतुर्वेदी मैडम - आप नहीं जानते देवांगन सर। ओ दूसरे संकुल में मेरी सहेली पदस्थ है। उनके स्कूल को पिछले साल ही आदर्श शाला के रूप में चिन्हांकित कर कार्य आरंभ किया गया था। जानते हैं उस दिन से ही हर हफ्ता कोई न कोई अधिकारी पर्यवेक्षण करने आते ही रहते हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक विषय का अध्यापन योजना, शिक्षण सामग्री, नवाचार का प्रयोग, बच्चों व स्कूल से संबंधित समस्त पंजी को अद्यतन करना न जाने और क्या क्या काम पूर्ण स्थिति में रखना पड़ता है। मेरी सहेली बतला रही थी कि ऐसे स्कूल के शिक्षकों का आये दिन कोई न कोई प्रशिक्षण अलग से होते रहता है। इन सभी कार्यो के कारण समय पर छुट्टी भी नहीं मिल पाती बेचारी दुखी रहती है।

बरामदे में ही खड़े खड़े तीनों बात कर रहे थे। इतने में ही साहूजी बाहर से बरामदे में प्रवेष करते हुये तीनों से ही कहता है, अरे आप लोग बरामदे में ही खड़े हुये हैं।

साहू जीं को नमस्कार करने के बाद देवांगन सर बोले ओ क्या है सर। हम लोग कक्षा में ही जा रहे थे, उसी समय आप दिख गये। सोंचा कि कहीं हमारे लिये कोई दिशा निर्देश होगा, तो यहीं बरामदे में ही उसे ले लेंगे। साहू जी रूकते हुये बोला- नहीं देवागंन सर। आप लोग तो जानते हैं कि शासन की ज्यादातर दिशा निर्देश सामूहिक होता है, व्यक्तिग नहीं। वह मैं आपके प्रधान पाठक को बतला दूंगा।

साहू जी यह बोलते हुये सीधा स्टाफ रूम के अंदर प्रवेष करता है। मिश्रा जी उन्हें अपने सामने के कुर्सी पर बैठाता है। इसी बीच देवांगन सर, लहरे मैडम और चतुर्वेदी मैडम भी स्टाफ रूम में आकर अपने अपने स्थान में बैठ जाते हैं। बैठने के बाद चतुर्वेदी मैडम बोली- हां साहूजी अब बतलाईये क्या सामूहिक दिशा निर्देश है?

साहूजीं- मैडम ओ तो मैं मिश्रा जी से चर्चा कर लूंगा न। आप लोग मेरे कारण कक्षा की पढ़ाई मत रोकें। लहरे मैडम- नहीं ऐसी कोई बात नहीं है सर। जल्दी से आप बतला दीजिये। फिर हम लोग कक्षा में चले जायेंगे। देवांगन सर- हां सर हमने सोचा कि सामूहिक दिशा निर्देश को समूह में ही सुनना उचित होगा। ताकि उस पर हम सामूहिक सहमति से योजना बनाकर कार्य कर सकें।

साहूजी- आप सभी लोग अभी कुछ दिन पहले के पेपर मे तो पढ़े ही होगे, जिसमे एक माध्य. शाला को संकूल का आदर्श शाला बनाया जाना है। मुझे आप लोगों का स्कूल हर दृष्टि से उचित जान पड़ा क्योकिं आप सभी हमारे संकुल के अच्छे शिक्षकों में गिने जाते हैं। फिर यह काम एक दो शिक्षकों की बस की बात भी नहीं है। इसके लिये शाला में जितने भी शिक्षक पदस्थ हैं, सबके मध्य सामूहिक जिम्मेदारी की भावना होनी चाहिए, तभी आदर्श शाला बन पायेगी।

लहरे मैडम- सर यह नाम आप अपने तरफ से प्रस्तावित कर रहें हैं या ऊपर से ही हमारे स्कूल का नाम चिन्हांकित हुआ है? साहूजी- स्वाभाविक है मैडम नाम मेरे तरफ से ही प्रस्तावित है क्योंकि मैं ही जान सकता हूं कि कौन सा स्कूल आदर्श शाला बन सकता हैं और कौन सा नहीं।

मिश्रा सर जी जो अभी तक सभी की बातें ध्यान से सुन रहे थे। साहू जी के चुप होने के बाद बोले- साहूजी यह तो मेरा सौभाग्य है कि आपने हमारे स्कूल को यह

अवसर प्रदान किया और आप विश्वास रखिये हम सभी मिलकर इस दायित्व का निर्वहन करेंगे।

मिश्रा जी की बातों से प्रसन्न होते हुये साहूजी ने कहा- मुझे यही उम्मीद थी सर और फिर आगे जिस भी प्रकार के सहयोग की आवश्यकता रहेगी मेरे साथ साथ हमारे विभाग के सभी अधिकारी समय समय पर आकर आप लोगों का मार्गदर्शन और सहयोग करते रहेंगे।

साहू जी अन्य आवश्यक दिशा निर्देश देकर वहां से दूसरे शाला पर्यवेक्षण के लिये चले गये। उनके जाने के बाद थोड़ा नाराज होते हुये लहरे मैडम बोली- मिश्रा सर जी आपको क्या जरूरत थी साहूजी से यह बोलने की कि यह हमारे लिये सौभाग्य की बात है।

मिश्रा सर जी मैडम को समझाते हुये बोला- ऐसा नहीं कहता तो क्या कहता। आप ही बतला दीजिये। लहरे मैडम के बदले चतुर्वेदी मैडम उत्तर देते हुये बोली- कह देते न सर कि इस स्कूल के बदले किसी दूसरे स्कूल का नाम प्रस्तावित कर दीजिये साहू सर। चतुर्वेदी मैडम की बातों से असहमति जताते हुये मिश्रा जी ने कहा- और कहीं दूसरे स्कूल वाले भी हमारे जैसा ही बोले तो क्या होता?

इस बार बोलने की बारी देवांगन सर की थी। उन्होंने नाराजगी दिखाते हुये कहा- फिर भी सर आपको इतनी बड़ी बात कहने के पहले आम सहमति बनानी चाहिये थी। रह गया सवाल दूसरे स्कूल वाले क्या बोलते, तो सबका ठेका हम लोग थोड़ी लिये हैं। देवांगन सर को जवाब देते हुये मिश्राजी ने कहा- देवांगन जी, मैं यहां का संस्था प्रमुख हूं। मैं तो हमेशा चाहूंगा कि मेरा स्कूल सभी स्कूलों में श्रेष्ठ हो और मेरे शिक्षकों का नाम चारो तरफ हो। दूसरी बात यह है कि इससे हमारे स्कूल को बहुत सारी सुविधायें व छूट भी मिलेगी।

चतुर्वेदी मैडम मुह बनाते हुये बोली- ओ तो ठीक है सर। सुविधायें और छूट जब मिलेगी तब मिलेगी। लेकिन पहले तो फटेहाल मेहनत करनी पड़ेगी और आप तो जानते है कि मेरी तबीयत आये दिन बिगड़ते रहती है।

मिश्रा जी- मैडम आप लोग पहले से ही काम को बोझ समझ लेते हैं। फिर यह काम आप अकेले को थोड़ी करना है, जैसा साहूजी बोल रहे थे कि शासन का ज्यादातर निर्देश सामूहिक होता है, सो मिलजुलकर सब करेंगे।

देवांगन सर- नही सर। मैं अब भी यह बोल रहा हूं कि साहूजी को सीधा-सीधा हां कहने के बजाय यह कह देते की ठीक है साहूजी पहले मैं अपने शिक्षकों से राय-मशविरा कर लेता हूं उसके बाद बतलाता हूं। पर आपने तो सीधा उन्हें हां बोल दिया। मैं आप लोगों को बतलाने ही वाला था कि अगले माह मुझे करीब एक माह का छुट्टी लेना पड़ सकता है। पहले जो छुट्टी सरलता से स्वीकृत हो जाता उसके लिये अब मुझे कार्यालय का कई चक्कर लगाना पड़ेगा। हो गई न परेशानी शुरू। मिश्रा सर - देवांगन सर आपसे किसने यह बोल दिया कि आदर्श शाला घोषित स्कूलों के शिक्षकों को छुट्टी नहीं मिलती। सब छुट्टी मिलती है। हां कारण वाजिब होना चाहिये।

मिश्रा जी के बातों से असहमति जताते हुये काफी देर से चुप बैठी लहरे मैडम बोली- बात केवल छुट्टी भर की नहीं है सर। हमें कई बार प्रशिक्षण भी लेना पड़ेगा। आप तो जानते है कि मुझे बाहर का पानी और खाना सुट नहीं करता। जल्दी बीमार पड़ जाती हूं। साल में एक दो बार रुटिन का ट्रेनिंग तो किसी तरह दवाई खाकर पूरी कर लेती हूं पर यह आये दिन के ट्रेनिंग से तो तैं मर ही जाऊंगी।

मिश्रा सर जी ने जब देखा कि कोई भी शिक्षक इस बात से खुश नहीं है तो निराश होकर बोला- ठीक है भाई जब आप सभी इस बात पर असहमति जता रहे हैं तो मेरे अकेले के चाहने से क्या होगा। ओ तो मैं आप लोगों की भलाई के लिये ही आदर्श शाला बनाने के लिये पहल कर रहा था। इसी बहाने कम से कम हमारे स्कूल के बच्चों की गुणवत्ता भी सुधर जाती। और जब आप लोग सहयोग के लिये तैयार ही नहीं है तो मैं साहूजी को मना कर देता हूं कि ओ दूसरे स्कूल का नाम प्रस्तावित कर दें। पर इसके साथ आप लोगों को यह भी बतला देता हूं कि अगले माह जारी होने वाले अतिशेश शिक्षकों की सूची में जिसका भी नाम आयेगा, उसे दूसरे एकल शिक्षकीय या शिक्षक विहिन स्कूल में जाने के लिये तैयार रहना होगा।

मिश्रा जी के बातों को सुनकर तीनों का सर चकराने लगा। मन में तुरंत डर पैदा हुई कि पता नहीं उन तीनों में से किसका नंबर लग जाये। मिश्रा जी के बातों का लगातार विरोध करने के कारण उन तीनों में मिश्राजी से यह कहने की हिम्मत नहीं हुई कि सर हम सभी आपके बातों को मानने के लिये तैयार हैं। इधर मिश्राजी फोन लगाकर साहूजी को मना कर रहा था और उधर तीनों शिक्षकों में आंखों ही आंखों में ऐसी सहमति बनी कि बिना एक भी पल गवांए सीधा स्कूल के मैदान में आकर अपने अपने फोन से साहूजी को फोन लगाने लगे और तीनों के फोन पर एक ही आवाज सुनाई दे रहा था। दैट कस्टमर, टू हूम यू काल्ड इज नाउ बीजी। जैसे जैसे इस पंक्ति की पुनरावृत्ति हो रही थी वैसे वैसे तीनों के चेहरे के भाव भी देखने लायक हो रहा था।

तीनों फोन में बात करने के लिये लगातार प्रयास करते रहे, लेकिन कोई फायदा नहीं। समय हो जाने पर चपरासी रामप्रसाद दीर्घ अवकाश के लिये लंबी घंटी

बजाता है। बच्चे मध्यान्ह भोजन के लिये बैठने लगते है और तीनों असफल होकर स्टाफ रूम में चेहरा लटकाकर बैठ जाते हैं।

पांचवा कालखण्ड

दीर्घ अवकाश के बाद चपरासी रामप्रसाद पांचवे कालखण्ड की घंटी लगा चुका था। मिश्रा सर जी लहरे मैडम और चतुर्वेदी मैडम को कक्षा में जाने के लिये बोलकर खुद कक्षा सातवीं में पिरिएड लेने चला गया था। देवांगन सर जी का पांचवा कालखण्ड खाली रहता है, यह जानते हुये भी चतुर्वेदी मैडम, लहरे मैडम से बोली- मैडम ये देवांगन सर जी कहां चले गये हैं।

लहरे मैडम को देवांगन सर का स्टाफ रूम में न रहना बिल्कुल अजीब नहीं लगा क्योंकि देवांगन सर प्रायः अपने खाली पिरिएड में स्कूल के बाहर स्थित पान दुकान या होटल में जाकर लोगों से बात करते रहते हैं। इसलिये चतुर्वेदी मैडम से बोली- क्यों मैडम देवांगन सर से कुछ विशेष काम है क्या? मुझे लगता है मध्यान्ह भोजन करने के बाद बाहर टहलने निकले होंगे, जैसे वह प्रायः करते हैं।

चतुर्वेदी मैडम बोली- हां मैडम विशेष काम ही समझो। सर से मैं थोड़ा सौंफ और इलायची मंगाती। लहरे मैडम- सौंफ और इलायची की क्या जरूरत पड़ गई। पहले तो आपको कभी खाते नहीं देखी। नया शौक पाल ली क्या? चतुर्वेदी मैडम- अरे शौक नहीं मैडम मजबूरी है। लहरे मैडम- कैसी मजबूरी? चतुर्वेदी मैडम- आप तो जानती हैं कि मुझे मध्यान्ह भोजन में बनने वाली सब्जी अच्छी नहीं लगती। इसी कारण देखी होगी कि मैं अपने घर से प्रतिदिन सब्जी की टिफिन लेकर आती हूं। आज देर हो गई थी, इस कारण नहीं ला पाई। यहां के सब्जी में बनाने वाली ने इतना मिर्च डाल दी थी कि बड़े मुश्किल से थोड़ा सा खा पाई हूं। जीभ और मुंह अभी भी जल रहा है। देवांगन सर बाहर निकल रहा था तो सोची की थोड़ा सौंफ और इलायची मंगाकर खा लेती हूं। शायद इससे मुंह को थोड़ी राहत मिले।

लहरे मैडम- तो बात यह हैं तभी तो खाते समय मैं सोच रही थी कि आज चतुर्वेदी मैडम इतना धीरे धीरे और बिना कोई बातचीत किये कैसे खा रही है। फिर सोची की शायद पेट पहले से भरा हो और केवल हम लोगों का साथ देने के लिये खा रही है, इसलिये खाते खाते नहीं पूछी।

चतुर्वेदी मैडम- क्या बतलाऊ मैडम। जैसे ही कौर मुंह में डालती थी ऐसा लगता था जैसे कि वह कौर मुंह में जाते ही आग के गोले में बदल जा रही हो।

लहरे मैडम- अरे तो वहीं बतलाना था न। रसोईये को बुलाकर सब मिलकर बोलते कि देखो सब्जी में कितनी मिर्च है। जब हम बड़ो का यह हाल हो रहा है तो बच्चे कैसे खायेंगे या फिर खाना छोड़ देना था। दोनों में से कोई न कोई काम तो करना था। इससे उन लोगों को सबक तो मिलता और कल से खाने में सुधार भी करते।

चतुर्वेदी मैडम- कैसे बोलती मैडम। मुंह में जलन के कारण बोल नहीं पा रही थी और भूख लगने के कारण खाना को छोड़ नहीं पाई। आखिरी में पानी पीने के बाद तो बड़ी मुश्किल से मुंह में जान आई।

लहरे मैडम- हां मैडम ठीक बोल रही हो। कभी-कभी हम सब के साथ ऐसी विरोधाभासी घटना हो ही जाती है। अब देखो न अगर आप सब्जी तीखी होने के कारण खाना छोड़ देती तो दिन भर भूखे रहना पड़ता और जब खा ली तो अब काफी देर तक मुंह की जलन सहते रहो। वैसे ही मेरे साथ भी होती है आप तो जानते हैं कि ज्यादा तेल वाला खाना मेरे पेट को खराब कर देती है। अब अगर कम तेल वाली सब्जी बनाऊं तो इसके लिये घर में और बड़े सबेरे से उठना पड़ेगा और अगर न बनाऊं तो यहां की तेल वाली सब्जी खा-खा कर पेट खराब करो। समझ में नहीं आता की क्या करना अच्छा होगा। इसलिये छोड़ दी हूं ऊपर वाले के ऊपर। जो होगा देखा जायेगा।

चतुर्वेदी मैडम- हां मैडम सही बोल रही है। कभी कभी तो मैं भी घर से ठान कर निकलती हूं कि आज से स्कूल में खाना ही नहीं खाऊंगी। पर यहां सभी बच्चों और आप लोगों को खाना खाते देखकर अपने आप को नहीं रोक पाती और खाना खा ही लेती हूं।

लहरे मैडम- मैडम तो इसमें आपकी क्या गलती है। ये तो रसोईयों को सोंचनी चाहिये न। भाई सबका तासीर एक जैसी थोड़ी होती है। सब्जी में हर चीज कम डालनी चाहिये। अरे जिसको कोई चीज ज्यादा खाना रहेगा वह अलग से मांग लेगा। पर पहले से ही कोई चीज ज्यादा मात्रा में डाल देंगे उसे तो नहीं निकाल सकते न। किसी दिन रसोईये को बोलना पड़ेगा कि वे ध्यान से खाना बनाये तो बनाये नहीं तो घर बैठे।

चतुर्वेदी मैडम- कोई फायदा नही मैडम। मैं बीच-बीच में बोल के देख चुकी हूं। जानती हो वे लोग क्या बोलते हैं? बोलते हैं मैडम अगर आप लोगों के अनुसार खाना बनाना शुरू कर दें न तब तो उस दिन से एक भी बच्चा स्कूल में खाना न खाये। अरे बच्चों को चाहिये चटपटा खाना। वे लोग खेलकूद व धमा चौकड़ी करके सब कुछ हजम कर लेते हैं। फिर हम लोग बच्चों के खाने के प्रति जवाबदेह है। अगर बच्चे खाना न खाये और बात ऊपर तक चली जाये तब तो हमारी नौकरी ही चली जायेगी न।

लहरे मैडम- अच्छा रसोईया यह सब कुल बोल रही थी।

चतुर्वेदी मैडम- हां मैडम। और बहुत कुछ बोली है। अब सब तो अभी याद नहीं आ रही है। याद आते जायेगी आपको बतलाते जाऊंगी। चतुर्वेदी मैडम के चुप होने पर लहरे मैडम घड़ी पर नजर डालते हुये बोली- अरे मैडम पिरिएड की घंटी लगे 15 मिनट हो गया। ऐसा करते हैं कक्षा में चलते हैं जैसे ही देवांगन सर दिखेंगे बाहर

निकलकर उनसे ईलायची और सौंफ मंगा लेंगे। नहीं तो मिश्रा सर जी फिर बोलेंगे की अरे आप लोग अभी तक यहीं है।

लहरे मैडम की बात सुनकर चतुर्वेदी मैडम मुस्कराकर बोली - अरे मिश्राजी को छोड़ो मैडम। उनका बस चले तो वे तो रात में भी कक्षा लगवा देंगे। आप तो जानती है मैडम मेरा अभी सामाजिक अध्ययन का पिरिएड है और उसमें लगातार बोले बिना काम ही नहीं चलता। आप समझ सकती है कि मुझे पढ़ाने में कितनी दिक्कत होगी। बड़ी मुश्किल से तो बोल पा रही हूं। पता नहीं ये मध्यान्ह भोजन वालों ने कहां की और कितनी मिर्च सब्जी में डाल दी थी। अभी तक जलन कम नहीं हुई है और मुझे तो बीच बीच में लगता है कि जलन कम होने के बजाय और बढ़ती जा रही है।

चतुर्वेदी मैडम की बात सुनकर चिंता व्यक्त करते हुये लहरे मैडम बोली- और मेडम ऐसे में आपको यहां अकेले छोड़कर मैं भी कक्षा में नहीं जा सकती। सामने भले से कुछ नहीं बोलोगी पर मन ही मन तो यही कहोगी न कि देखो तो लहरे मैडम कितना स्वार्थी हो गई है जो मुझे इस तकलीफ की घड़ी में अकेले छोड़कर कक्षा में पढ़ाने चली गई। और मैं सब कुछ बर्दाश्त कर सकती हूं पर अपने ऊपर स्वार्थी होने का धब्बा कभी बर्दाश्त नहीं करूंगी। भले से उसके लिये मुझे कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। अरे ज्यादा से ज्यादा क्या होगा? मिश्रा सर जी दो शब्द सुना देंगे। तो वह मैं सुन लूंगी पर कोई मुझे स्वार्थी कहे यह कभी नहीं सुनना चाहूंगी। आखिर मानवता भी कोई चीज होती है। अरे मान लो आप मुझे कुछ नहीं कहेंगे। मन में किसी प्रकार की बुरा भावना भी नहीं रखेंगी। फिर भी मैं अपने अंतरात्मा को क्या जवाब दूंगी, जब मेरी अंतरात्मा मुझसे पूछेगी की कैसे साथी हो जो अपने दिन भर साथ रहने वाली साथी को अकेली छोड़कर पढ़ाने चली गई और ऐसे में मैं कक्षा में चली भी जाती हूं जाकर पढ़ाने भी लगती हूं, तो मन

से थोड़ी कर पाऊंगी। पूरा मन तो आपके तरफ ही लगी रहेगी। बार बार यही ख्याल आते रहेगी की पता नहीं जलन और दर्द कम हुआ या और बढ़ गया।

लहरे मैडम की अपनत्व से भरी बातें सुनकर भाव विभोर होते हुये चतुर्वेदी मैडम बोली- लोग सही कहते हैं मैडम कि दुख और विपत्ति में ही अपने और पराये की पहचान होती है। आज मैं जान गई हूं कि आपके मन में मेरे लिये कितना प्रेम है।

अपनी प्रशंसा से प्रफुल्लित होती हुई लहरे मैडम बोली- मैडम यह तो सब संस्कार की बात है। मैं ऐसे घर में पली बढ़ी हूं जहां अगर मोहल्ले के घर में कुछ हो जाता था, तो उसका पूरा असर हमारे घर पर पड़ता था। अगर मोहल्ले के किसी घर में कोई कारण से खाना नहीं बनता तो मेरी मां हमारे घर में तब तक खाना नहीं बनाती थी जब तक उसके घर में खाना बनना शुरू नहीं हो जाती थी। वैसे ही दूसरों के खुशी से हमारे पूरे घरवाले खुश हो जाया करते थे। यह सब मैं अपने बचपन से देखती आई हूं और ऐसे में भला आप ही बतलाओं मैं आपको इस दुख और तकलीफ की घड़ी में छोड़कर कक्षा में पढ़ाने कैसे जा सकती हूं।

चतुर्वेदी मैडम- हां मैडम। आजकल आप जैसे संस्कारित लोग रह ही कितने गये हैं। यहां तो आजकल ऐसे ऐसे लोग भरे पड़े है जो जलने पर मरहम लगाने के बदले और नमक छिड़क देते हैं। आपसे बात करते करते मैं यही सोच रही थी कि देखो तो लहरे मैडम के मन में मेरे लिये कितना अपनत्व की भावना है। यहीं अगर आपके बदले कोई और होता या होती तो मेरा मजाक उड़ाते हुये कहते अरे मैडम क्या आपको पूरा डकारने के बाद पता चला की सब्जी तीखी है और जब पहले ही कौर में पता चल गया था तो अगला कौर खाई ही क्यों? और अगर मान भी लें कि आपको सब्जी के तीखा होने का पता आखिरी में चला तो बार बार पानी पीकर ठीक कर लेती या रसोई से थोड़ा शक्कर मंगाकर खा लेती। यह सब कुछ

नहीं कर सकती तो ऐसा परिस्थिति ही उत्पन्न न हो इसके लिये प्रतिदिन अपने घर से अपना अलग सब्जी का टिफिन क्यों नही लाती। और पता नहीं मुझे क्या क्या सुनाते।

लहरे मैडम - अरे छोड़ो न मैडम जो बात हुआ नहीं है उसकी चिंता करके अपने मन को और क्यों ज्यादा दुख दे रही हो। मैं कहीं पर पढ़ी थी कि अगर षरीर में कोई कष्ट हो और मन में भी उसकी अनुभूति करने लगे तो वह कष्ट कम होने के बजाय और बढ़ने लगती है। इसी कारण विव्दानों ने कहा है कि हम अपने मन को प्रसन्न रखकर अपने शारीरिक कष्टों को कम कर सकते हैं और अगर ऐसे में आप दूसरों की चिंता करके अपने मन में तनाव उत्पन्न करोगी तो मुंह की जलन कम होने के बदले और बढ़ने लगेगी।

चतुर्वेदी मैडम को शांत देखकर बात आगे बढ़ाते हुये लहरे मैडम बोली- कैसे चतुर्वेदी मैडम अब खाना खाये लगभग तीस मिनट का समय हो गया है। इस बीच मुंह की जलन कम हुई है या और बढ़ गई है?

चतुर्वेदी मैडम- मैडम जब चुप होती हूं तब लगता है कि दर्द ज्यों का त्यों बनी हुई है लेकिन जैसे ही बोलना शुरू करती हूं, दर्द बढने लगती है। इसी कारण तो अभी ज्यादा बोल नहीं पा रही हूं। लहरे मैडम- मैडम ऐसा करें क्या कि किसी लड़के को भेजकर सौंफ और इलायची मंगा लेते हैं। ये देवांगन सर का तो कहीं अता-पता नहीं चल रहा है। वैसे काम नहीं रहता तो दिन भर कुर्सी तोड़ते बैठे रहते हैं और आज काम की इस घड़ी में नदारद हो गये हैं। चतुर्वेदी मैडम- नहीं मैडम किसी लड़के को नहीं भेजेंगे। बाहर दुकान में गांव के कई लोग खड़े रहते हैं। लड़के को सौंफ और इलायची लेते देखकर पूछेंगे ही कि किसके लिये ले जा रहे हो। अब बच्चे बात तो बना नहीं सकेंगे। सीधी बोल देंगे कि चतुर्वेदी मैडम मध्यान्ह भोजन

के खाने में ज्यादा मिर्च खा ली और अब मुंह में जलन से तड़फ रही है तो जलन कम करने के लिये सौंफ और इलायची मंगाई है। लोग ऐसी थोड़ी सोचेंगे की सचमुच में मैडम को तकलीफ हो रही होगी। वे तो मजाक उड़ाते हुये यही कहेंगे न कि और मुफ्त का खाये। इससे मजाक तो बनूंगी ही साथ ही साथ बदनामी भी होगी।

लहरे मैडम- तो ऐसा करते हैं मैडम रामप्रसाद को भेज देते हैं। वह समझदार है स्थिति को संभाल लेगा।

चतुर्वेदी मैडम- नहीं मैडम उसे तो बिल्कुल नहीं भेजुंगी। जानती हो उसका एक ही रटा रटाया जवाब रहता है। मैडम पहले मिश्राजी से पूछ लेता हूं। उसके बाद जैसा बोलेंगे वैसा करूंगा। और मिश्राजी के पास बात जाने का मतलब आप समझती ही हैं। जैसे किसी मामले की जांच के लिये समिति बनाई जाती है और फिर विस्तृत जांच कर निष्कर्श निकालते हैं, वैसे ही पूरी प्रक्रिया का पालन करने के बाद अगर उनको जंच गया, तब रामप्रसाद को अनुमति देंगे की रामप्रसाद ठीक है जाओ पान दुकान से सौंफ और इलायची लाकर मैडम को दे दो और साथ ही मुझसे बोलेगा की मैडम अब आपको खाना खाये लगभग 35 मिनट हो रहा है। सामान्य रूप से मिर्च का जलन इतनी देर तक नहीं रहता और अगर इतनी देर बाद भी जलन और उसके साथ दर्द भी है, तो पूरी संभावना है कि आपके मुंह में छाला निकल आया हो, और आप इसकी जांच शहर के किसी बड़े डाक्टर से करवाओ अन्यथा मुंह के छाले को मुंह के कैंसर में परिवर्तित होने में देर नहीं लगता।

लहरे मैडम- अरे मैडम मैं तो इस पहलू के बारे में सोच ही नहीं पाई थी। तो चलो ऐसा करते हैं कि हम दोनों ही पान दुकान जाकर सौंफ और इलायची खरीदकर ले आते हैं। कौन किसी का गरज करता रहे। चतुर्वेदी मैडम- नही मैडम। हम दोनो भी

नहीं जायेंगे। वैसे भी बीच बीच में चुप रहने के कारण धीरे धीरे अब दर्द गायब होते जा रहा है। दो मिनट और चुप रहूंगी तो दर्द एकदम गायब हो जायेगी। चतुर्वेदी मैडम यह बोलकर आंख बंद करके चुपचाप वहीं खड़ी हो जाती है। रामप्रसाद समय हो जाने पर छठवें पिरिएड की घंटी लगाता है। उसी समय देवांगन सर बाहर से आता दिखाई देता है। देवांगन सर को देखते ही लहरे मैडम बोली- देवांगन सर जी आप कहां चले गये थे? हम दोनों कब से आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और आप है कि अभी आ रहे हैं?

देवांगन सर चतुर्वेदी मैडम को आंख बंद किये खड़े देखकर पूछा- अरे मैडम को क्या हुआ? लहरे मैडम- सर इन्हीं के कारण तो आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैडम के मुंह में मिर्च के कारण जलन हो रहा था और बेचारी बोल नहीं पा रही थी। इसी कारण हम दोनों ने पिरिएड भी मिस कर दी। सोची आपसे सौंफ और इलायची मंगाकर खा लेते तो ठीक हो जाता। देवांगन सर- मैडम मेरे पास सौंफ और इलायची तो है लेकिन केवल एक के लिये ही होगा। अब आप दोनों निर्णय कर लीजिये की कौन लेगी या कौन नहीं।

लहरे मैडम- मुझे ही दे दीजिये सर। वैसे भी चतुर्वेदी मैडम अभी अभी कह रही थी कि दो मिनट चुप रहूंगी तो जलन अपने आप गायब हो जायेगी और मैं समझती हूं कि अब तो मैडम को पांच मिनट से ज्यादा हो गया चुप हुये। लहरे मैडम देवांगन सर से सौंफ और इलायची लेकर खाने लगती है। चतुर्वेदी मैडम आंख बंद किये चुपचाप कुछ देर पहले हुई बातचीत को याद कर मन ही मन मुस्कराने लगती है। मिश्राजी सहित सभी शिक्षक स्टाफ रूम में छठवें पिरिएड की तैयारी में जुट जाते हैं। स्टाफ रूम के वातावरण में लहरे मैडम के मुंह से निकलने वाली सौंफ और इलायची की खुशबू चारों तरफ फैलने लगी।

.....

छठवां कालखण्ड

चपरासी रामप्रसाद को छठवां पिरिएड की घंटी लगाये लगभग पांच मिनट हो चुका था। मिश्राजी के अतिरिक्त तीनों शिक्षकों को पिरिएड लेने जाना था, किंतु अभी तक वे स्टाफ रूम में ही बैठे जाने की तैयारी कर रहे थे। मिश्रा जी अब की बार उन तीनों से यह सोंचकर कुछ नहीं बोला कि उसी उसी काम के लिये कोई किसी को कितनी बार कहे और दूसरी ओर वह यह भी देखना चाहते थे कि बिना बोले ये लोग क्या करते हैं। यही सोंचते मिश्राजी अपने बेग से मोबाईल निकालकर कुछ करने लगा। उन्हें इस तरह शाला अवधि में मोबाईल आंन करते देख पहले तो तीनों को कुछ आश्चर्य हुआ किंतु बाद में यह सोचने लगे कि अभी उनका पिरिएड खाली है, और दिन भर कुछ न कुछ करते रहें है तो हो सकता है मन ताजगी के लिये कुछ पुरानी फिल्मों के गाने या फिल्म और नहीं तो व्हाटसप मैसेज चेक करने के लिये मोबाईल आन किये हों, क्योंकि वे तीनों खाली पिरिएड होने पर प्रायः वैसा ही करते थे, जैसा सोच रहे थे। मिश्राजी भी मोबाईल पर नजर जमाये कुछ ध्यान उनकी गतिविधियों पर भी दे रहे थे। इस बीच तीनों अपनी कुर्सी से कक्षा में जाने के लिये उठ चुके थे। तभी देवांगन सर ने देखा कि मिश्रा जी मोबाईल को देखकर अपने टेबल के सामने रखे नोट बुक पर कुछ लिख भी रहे हैं। उनके मन में आया कि मन की उत्सुकता को शांत कर ही लेना चाहिये। नहीं तो अशांत उत्सकुता तकलीफ का कारण बन जाता है और फिर उनकी इस असीम उत्सुकता का कारण भी उनके अनुसार वाजिब था और वह यह था कि आज तक उन्होंने बहुतों को मोबाईल चलाते हुये, हंसते, मुस्कराते, रोते और यहां तक की गुस्सा होते हुये भी देखा था लेकिन मिश्राजी जिस तरह मोबाईल से पढ़ पढ़ कर बातें नोट बुक में लिखते जा रहा था उसे देखकर तो ऐसा लगता था जैसे कोई छात्र पुस्तक

पढ़कर उसकी मुख्य मुख्य बातों को अपनी नोट बुक में लिखता हो। अतः देवांगन सर ने यह सोचकर की ज्यादा देर तक बिना कुछ पूछे यूं ही खड़े रहने से पिरिएड लेने में अनावश्यक विलंब होगा मिश्राजी से तुरंत पूछना शुरू किया सर। आप यह मोबाईल में क्या कर रहे हैं?

मिश्राजी- कुछ नहीं देवांगन जी। आप कक्षा से हो आईये। फिर बतला दूंगा। ओ कहते हैं न कि किसी चीज के बारे में कोई जानना चाहे और आप उसी समय उसे मत बतलाओ तो पूछने वाले की जिज्ञासा तो अचानक कई गुणी बढ़ती ही है, जो आस पास रहने वाले लोग होते हैं उनके मन में भी जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है। अभी तक मिश्राजी को मोबाईल पर काम करते देखकर केवल देवांगन सर के मन में उत्सुकता उत्पन्न हुई थी किन्तु जैसे ही मिश्रा जी ने यह बोला बाद में बतलाऊंगा वैसे ही देवांगन सर की उत्सुकता तो पहले से बढ़ी ही साथ ही लहरे और चतुर्वेदी मैडम जिनका इस ओर विशेष ध्यान नहीं गया था के मन में भी उत्सुकता उत्पन्न हो गई कि आखिर मिश्राजी ऐसा क्या रहस्यमय काम कर रहे हैं जिसके बारे में अभी नहीं बतला कर बाद में बतलाऊंगा कह रहे हैं। इससे पहले कि देवांगन सर पुनः मिश्राजी से बतलाने को कहते दोनो मैडम एक साथ ही बोल पड़ी- नहीं सर हमारे कक्षा में जाने के पहले बतलाईये। आप यह भी सोचिये न कि अगर अभी केवल देवांगन सर को बतलायेंगे और हमें नहीं तो यही काम आप को तीन बार करना पड़ेगा और ऐसा करना समय और ऊर्जा दोनों की ही बर्बादी होगी।

दोनों मैडम को इस तरह पहले से रटे रटाये अंदाज में एक साथ बोलते देख मिश्राजी अपना हंसी रोक नहीं पाये और खिलखिलाकर हंस पड़े। उनको जोर से हंसता देखकर तीनों को अच्छा नहीं लगा और नाराज होते हुये लहरे मैडम बोली- क्या सर बतलाने का मन नहीं था तो मत बतलाते। कम से कम इस तरह हंसकर हमारा मजाक तो न उड़ाते। लहरे मैडम की बातों से सहमति जताते हुये देवांगन

सर बोले- हां सर लहरे मैडम सही कह रही है। अरे हम लोग आपसे ऐसा क्या कह दिये या पूछ लिये जिसको बतलाने में आपका कुछ चला जाता। नहीं बतलाते तो नहीं बतलाते। पर यूं हंसकर हमारी जिज्ञासा का अपमान तो नहीं करते।

मिश्राजी उन तीनों को कुछ जवाब देने ही वाले थे कि बीच में मोर्चा संभालते हुये चतुर्वेदी मैडम बोल पड़ी- हां सर। मेरा भी यही कहना है। आप आये दिन हम लोगों के साथ ऐसा ही करते हैं। कभी आने जाने के नाम पर तो कभी कक्षा में जाने को लेकर और बड़ी बात करते हैं सामुहिक जिम्मेदारी की। ऐसे में आयेगी सामुहिक जिम्मेदारी। संस्था प्रमुख को पालक की तरह होना चाहिये। अपने स्टाफ के सभी सदस्यों की मान सम्मान, ईच्छा, आशा और विश्वास का ध्यान रखना चाहिये। तभी तो सदस्यों में भी यह भावना आयेगी की हमारे संस्था प्रमुख जब हमारी सभी चीजों का ध्यान रखते हैं तब हमारा भी यह फर्ज बनता है कि उनके आशा और विश्वास को बनाये रखें। ऐसे में आती है सामुहिक जिम्मेदारी की भावना, न कि किसी के जिज्ञासा को शांत करने के बजाये उसकी उपहास उड़ाने से।

चतुर्वेदी मैडम यह सब कुछ बोलते बोलते अपनी कुर्सी पर पुनः बैठ गई थी। उसे बैठते देखकर देवांगन सर और लहरे मैडम भी बैठ गये थे। तीनों को पुनः बैठते देखकर मिश्रा जी जान गया कि यह छठवां पिरिएड भी निष्फल ही जायेगा और अगर इन्हें जल्दी शांत न किया गया तो सातवें पिरिएड की सफलता पर भी अभी से ही प्रश्न चिन्ह लग जायेगा। यह सोचकर मिश्राजी कुछ बोलने ही वाले थे कि देवांगन सर ने कहना शुरू किया- सर यह आपने अच्छा नहीं किया। मैं भी दोनो मैडम की बातों से पूरी तरह सहमत हूं। सर ठीक है मुझे नहीं बतलाना चाहते थे, तो मत बतलाते। मुझे कोई दुख नहीं होता क्योंकि पुरूषों को स्वभाव से ही कड़ा माना जाता है। पर मैडम तो औरत है न। और सर आपने यह भी विचार नहीं किया कि प्रकृति ने औरत के मन को कितना कोमल बनाया है और उनके कोमल

मन में हल्का सा भी कोई चोट लग जाये तो समय के साथ चोट तो भले से भर जाता है, पर निशान कभी नहीं मिटता।

देवांगन सर की अपने पक्ष में हमदर्दी पूर्ण बातें सुनकर थोड़ा भावुक होते हुये लहरे मैडम बोली- देवांगन सर आप अपने ऊपर क्यों लेते हैं। दरअसल गलती हमारी ही है, जो हमने इतने आाशा और विश्वास के साथ सर से पूछ लिये। अब आइन्दा ख्याल रखेंगे कि मिश्रा सर जी चाहे कुछ भी करें न तो कभी उससे पूछेंगे और न ही चर्चा करेंगे।

जैसे ही लहरे मैडम चुप हुई चतुर्वेदी मैडम बिना कोई समय गवायें बोलना शुरू की - आज की बात का मेरे मन पर इतना गहरा असर हुआ है मैडम कि मैं तो मिश्रा सर से क्या अपने घरवालों से भी कुछ पूछने और जानने के पहले कम से कम हजार बार सोचूंगी। अरे सोचूंगी क्या मैं तो जिससे कुछ पूछना रहेगा उससे पुछूंगी बाद में पहले उससे शपथ लूंगी की भले से ही वह उत्तर दे या न दें लेकिन हंसेगा कभी नहीं।

तीनों शिक्षकों की इस तरह उल-जुलूल बातें सुनकर मिश्रा जी ने सोंचा कि अगर इन्हें तत्काल नहीं बतलाया गया तो ये लोग अनावश्यक रूप से बात को और लम्बा खीचेंगे जो व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों ही दृष्टि से उचित नहीं होगा। पर मन में यह भी आ रहा था कि इनके बोलने के कारण, उन्हें बोलने का मौका तो मिले। वह तो पहली मिनट से ही बतलाने का प्रयास कर रहा है, लेकिन तीनों के बीच बीच में कूद पड़ने के कारण उन्हें अवसर ही नहीं मिल पाया। अब की बार बिना मौका गवायें जैसे ही मिश्रा जी ने कहना चाहा उन्हें हांथों से रुकने का ईशारा कर देवांगन सर ने बोलना शुरू किया- सर आपको याद है हम जब कभी स्टाफ रूम में अपना मोबाईल निकालकर चलाने का प्रयास करते थे तब आप एक ही

बात कहते थे कि यह स्कूल का समय है और इस बीच में मोबाईल नहीं चला सकते। हमने आपकी बातों का कभी बुरा नहीं माना और आपकी बातों को ससम्मान शिरोधार्य किया। उसी तरह जब कभी मोबाईल बंद नहीं भी करते थे, तब आपको यह स्पष्ट बतला देते थे कि सर आज मन अच्छा नहीं लग रहा है, इस कारण गीत सुन रहे हैं या फिल्म देख रहे हैं। आपके जैसे छिपाते नहीं थे।

अभी देवांगन सर की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि मिश्रा सर ने यह सोचकर की ये लोग बात का बतंगड़ बनाते जा रहे है, थोड़ा जोर से आवाज में बोला देवांगन जी। यह आप लोग क्या बोले जा रहे हैं। मैने आप लोगों से कौन सी बात छिपाई है और कैसा अपमान कर दिया है? और मैं अपनी बात कब से कहना चाह रहा हूं पर आप लोग ऐसे क्रम से बोले जा रहे हैं जैसे कोई गिनती बोल रहा हो। अब मेरी बात आप लोग सुनेंगे कि अभी और कुछ मन में बाकी है बोलने के लिये।

मिश्राजी शांत स्वभाव के व्यक्ति थे जो सामान्य रूप से हंसकर ही बात करते थे। उनके व्दारा इस तरह सख्त बात कहे जाने की उन तीनों में से किसी को उम्मीद नहीं थी। और यह भी सत्य है कि अगर कोई बात हमारे उम्मीदों के अनुसार न हो तो दो तरह की प्रतिक्रिया होती है। पहली प्रतिक्रिया उम्मीद पूरी होने या करने की जिद पर अड़ जाना या फिर उसका ख्याल ही दिमाग से निकाल देना। पहली परिस्थिति के लिये जहां इरादे और प्रयास का सच्चा होना जरूरी है वहीं दूसरी परिस्थिति छल कपट या बनावटीपन के कारण उत्पन्न होती है। यहां पर दूसरी परिस्थिति ज्यादा प्रभावी थी अतः मिश्रा जी के सख्त रवैये के बाद लहरे मैडम सकपकाते हुये धीरे से बोली- आप क्या कहना चाह रहे है सर? और क्या आपको अब भी लग रहा है कि आपने हमारा अपमान नहीं किया है और वह आपकी हंसी हमारे मन की कोरी कल्पना रही है? लहरे मैडम के चुप होते ही मिश्राजी ने कहा- बिल्कुल नहीं मैडम। आप लोगों में यही तो कमी है कुछ ना कुछ सोंच लेते हैं।

आप और चतुर्वेदी मैडम दोनों एक साथ एक ही बात को जिस तरह मुझसे पूछ रहे थे, मेरी हंसी उस बात पर थी। न कि आप लोगों की जिज्ञासा पर। मैं तो यह सोंचकर हंसा की देखो तो कितनी सुंदर बात है जो इतनी उत्कट जिज्ञासा इन दोनों के मन में है, जैसे की किसी बच्चे के मन में उत्पन्न होती है और वे निर्मल मन से अपने प्रश्नों को रखते चले जाते है। अब बतलाओ मेरी वह हंसी आप लोगों के अपमान की थी या आपके मन में उत्पन्न जिज्ञासा की सम्मान में।

मिश्राजी कुछ पल के लिये यहीं रूका ही था कि चतुर्वेदी मैडम बोल पड़ी तो यह बात थी सर। अभी चतुर्वेदी मैडम का प्रश्न पूरा भी नहीं हुआ था कि देवांगन सर ने अगला प्रश्न किया और सर उसके बारे में तो आपने अभी तक कुछ नहीं बतलाया, जहां से बात शुरू हुई थी। चतुर्वेदी मैडम और देवांगन सर दोनो को एक साथ जवाब देते हुये मिश्रा जी ने कहा- अरे भाई। मैं अपने मोबाईल से ''द टीचर एप'' से कोर्सेस डाऊनलोड करके पढ़ रहा था और उसमें जो भी बातें मुझे महत्वपूर्ण लग रही थी उसे नोटबुक में लिखते जा रहा था ताकि बच्चों को बतलाते समय किसी प्रकार की कोई दिक्कत न हो। अब आप ही सोंचिये वहां बच्चों के सामने मोबाईल से ही देख देख कर बतलाना क्या अच्छा होता। और आप लोग है कि कहां की बात को कहां पर ले जाने के लिये तुले हुये थे। अब तो आप लोग समझ गये होंगे न कि मैं कोई रहस्यमय काम मोबाईल पर नहीं कर रहा था। और अंत में आप तीनों से मेरा यही कहना है कि ''द टीचर एप'' को अपने मोबाईल पर डाऊनलोड करके उसमें उपलब्ध कराये गये कोर्स की बातें बच्चों तक पहुंचायें। मिश्राजी की बातें सुनने के बाद तीनों को अंदर से यह अहसास हो गया कि गलती उन्हीं की थी और अब उन्हें यह ''द टीचर एप'' जिसे डाऊनलोड करने से वे अब तक जानबूझकर बचते आ रहे थे, डाऊनलोड करना पड़ेगा ओ अलग। ऐसा न करना पड़े इसी सोंच में डूबे तीनों के मुंह से एक साथ निकला- सर ओ क्या है कि अभी हमारे पास जो

हैण्डसेट है उसमें ‘‘द टीचर एप’’ इंस्टाल ही नहीं हो रहा है। नया हेण्टसेट खरीदकर इन्सटाल करेंगे।

तीनों की जवाब सुनकर मिश्राजी फिर अपनी हंसी नहीं रोक पाये और खिलखिलाकर हंस पड़े। इससे पहले की तीनों में से कोई कुछ कहता चपरासी रामप्रसाद ने सातवां पिरिएड की घंटी बजा दिया।

सातवां कालखण्ड

अंतिम कालखण्ड की घंटी लग चुकी थी। मिश्रा जी कछा छठवीं में पिरिएड लेने जा भी चुके थे। लहरे मैडम का अभी कोई पिरिएड नहीं होने के कारण टेबल पर पड़े पुस्तकें रजिस्टर और अन्य सामग्रियों को व्यवस्थित करने में व्यस्त थी। चतुर्वेदी मैडम और देवांगन सर को पिरिएड लेने जाना था। दोनों अपनी अपनी कुर्सी से उठते हुये लहरे मैडम से बोले- मैडम हम लोग पिरिएड लेने जा रहे हैं। आपके सामने रखे सामान को व्यवस्थित कर लेने के बाद प्लीज हमारे कुर्सी के सामने रखे सामानों को भी व्यवस्थित कर देना क्योंकि पिरिएड समाप्त होने के बाद इतना भी समय नहीं बचता की पीछे मुड़ के देख सकें। सीधा ट्रेन पकड़ने के लिये स्टेशन की ओर भागना पड़ता है।

देवांगन सर और चतुर्वेदी मैडम व्दारा इस तरह काम दिया जाना लहरे मैडम को अच्छा नहीं लगा। प्रकट रूप में तो वह कुछ बोली नहीं पर अंदर ही अंदर कह रही थी- ये देख लो इन दोनों को। खुद कभी कोई काम करते नहीं और दूसरों से काम कराने का कोई अवसर कभी हाथ से जाने नहीं देते। मुझसे तो काम करने के लिये ऐसे कहते हैं जैसे मैं इन दोनों की घरेलू नौकरानी हूं। अरे जब अपने बिखेरे हुये को समेट नहीं सकते तो बिखेरते ही क्यों है? मैनर नाम की इन लोगों में कोई चीज ही नहीं है। अरे आखिरी पिरिएड तो तेरा इसी साल खाली रहा है न। पिछले साल चतुर्वेदी मैडम को और उससे पिछले साल देवांगन सर को अंतिम पिरिएड खाली मिला था। अपने अपने समय को ये दोनों याद क्यों नहीं करते। कि अब याद दिलाने की भी इन दोनों की नौकरी बजाऊँ। वैसे तो मैं रोज अपना काम खुद कर लेती थी पर किसी दिन कहीं ऐसा हो जाता की किन्हीं कारणों से मैं अपने सामने टेबल पर पड़े सामानों को नहीं व्यवस्थित कर पाती थी और इन दोनों से इनके समय कहती तो सीधे मेरे मुंह ऊपर कह देते थे मैडम अपना काम खुद

करना चाहिये और अब कैसे मुझसे अपना काम करने के लिये कह रहे हैं। कहां गई वह ईष्वरचन्द्र विद्यासागर जी की सीख। बड़ा मुझसे कहते थे मैडम क्या आप अपने समय में कक्षा 2री में ईष्वरचन्द्र विद्यासागर जी पर आधारित कहानी- अपना काम खुद करो। नहीं पढ़ी थी। मुझे तो 25-30 साल पहले की बातें याद करने के लिये बोल रहे थे और खुद को 1-2 साल पहले की बात भी याद नहीं है। इसी को कहते हैं- पर उपदेश कुशल बहुतेरे आई विपत्ति तो सब तेरे ही तेरे। वाह रे जमाना।

देवांगन सर और चतुर्वेदी मैडम को अपना कुर्सी छोड़ते समय यह महसूस हो गया था कि लहरे मैडम को उनके व्दारा जो काम करने के लिये दिया गया था उसे वह करना नहीं चाह रही है, क्योंकि उन दोनों को ऐसा लग रहा था कि जिस समय से उन्होंने मैडम को बोले थे उसी समय से मैडम के हांथो की गति एकाएक कम हो गई थी। अब दोनों बड़े धर्म-संकट में फंसते नजर आये। दोनों सोचने लगे कि पिरिएड समाप्त होने में केवल 25 मिनट शेष और ट्रेन आने में 40 मिनट। इस परिस्थिति में अगर वे दोनों अपने अपने पिरिएड लेने कक्षा में जाते हैं और वहां से आने के बाद सामानों को व्यवस्थित करने का काम शुरू करते हैं तब तो गाड़ी का छूटना निश्चित ही था, क्योंकि स्कूल से स्टेशन आप कितनों भी रफ्तार से चलो 10-15 मिनट तो लगता ही। और अगर सामान को पहले व्यवस्थित करने का कार्य करते तो पिरिएड छूटता। अब दोनों ही समझ नहीं पा रहे थे कि उनके लिये सबसे अच्छा क्या है? तभी एकाएक देवांगन सर और चतुर्वेदी मैडम दोनों की नजरे मिली और नजरें मिलते ही दोनों में एक मौन सहमति बनती नजर आई। यद्यपि दोनों एक दूसरे से बोले कुछ नही पर उन दोनों का हाथ अपने अपने कुर्सी के सामने रखे सामानों पर फिरने लगा।

देवांगन सर और चतुर्वेदी मैडम को खुद काम करते देखकर लहरे मैडम अंदर से बहुत प्रसन्न हुई और उसके प्रसन्न होने का कारण यह नहीं था कि उन दोनों को अचानक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जी की कहानी याद आ गई बल्कि उसकी प्रसन्नता का कारण यह था कि उसे उनके हिस्से का काम नहीं करना पड़ेगा। फिर भी बाहर से नाराजगी दिखाते हुये बोली- अरे आप ये क्या करने लगे। जाओ भाई अपने कक्षा में। जब आप लोगों ने मुझसे कह दिया है तब यह काम मैं करूंगी ही। भले से धीरे-धीरे ही सही। नहीं तो कहने के लिये तो हो जायेगा न कि ये देखो मैडम को छोटा सा काम करने के लिये बोले उसे भी नहीं की।

लहरे मैडम औपचारिकता का ध्यान रखते हुये बोलने के लिये तो जरूर बोल दी थी पर मन ही मन प्रार्थना भी करते जा रही थी कि हे भगवान इन दोनों के हिस्से का काम करने से मुझे बचा लेना। जब कुछ देर तक देवांगन सर और चतुर्वेदी मैडम की हाथों ने काम करना बंद कर दिया तब लहरे मैडम के पूरे शरीर में एक सिरहन सी दौड़ गई और वह मन ही मन पश्चाताप करते हुये कहने लगी- वह कौन सी मनहूस पल थी, जिसमें मेरे दिमाग में औपचारिकता निभाने का भूत सवार हो गया और मैं बोल पड़ी की रहने दो मैं कर लूंगी। अरे ठीक है मैंने औपचारिकता निभाई तो उन दोनों का भी तो फर्ज बनता है कि नहीं। वे भी कम से कम एक बार यह कहते कि नहीं मैडम हम कर लेंगे, कहकर अपनी औपचारिकता निभाते और वहीं पर मेरा काम बन जाता। पर अब क्या। फंस तो गई है बेबी निभा औपचारिकता। लहरे मैडम ऐसा सोचते अपने विचारों में उलझी हुई थी। उन्हें धीरे धीरे काम करते देख चतुर्वेदी मैडम देवांगन सर से बोली- सर कल से न हम लोग जितनी सामानों की जरूरत कक्षा अध्यापन के लिये होगा, उतने को ही टेबल पर रखा करेंगे। भले से अचानक काम आने की स्थिति में

आलमारी से फिर से निकाल लेंगे। इससे रोज रोज के अंदर बाहर करने का झंझट तो नहीं रहेगा।

अपने सामने के सामानों को एक तरफ धीरे धीरे खिसकाते हुये देवांगन सर बोला - मैडम मैं तो सोंच रहा हूं कि यह काम रामप्रसाद को सिखा देते हैं फिर कोई चिन्ता ही नहीं रहेगी। वैसे भी घंटी बजाने के अतिरिक्त वह करता ही क्या है? देवांगन सर के मुंह से रामप्रसाद का नाम सुनकर चतुर्वेदी मैडम थोड़ा चिड़ते हुये बोली अरे नहीं बाबा। मैं तो उसे अपनी जरूरत के चीजों को हाथ भी लगाने नहीं दूंगी। पता है एक दिन आप दोनों नहीं आये थे। उस दिन मैं उससे बोली रामप्रसाद भईया मेरे सामने के जो भी सामान है उसे छुट्टी होने के बाद मेरे कुर्सी के बगल वाले आलमारी में रख देना। तब से सर कसम से कह रही हूं उनमें से कई चीज मुझे आज तक नहीं मिली है और पूछती हूं तो बोलता है कि मैडम मेरा काम रखने का था ढूंढने का नहीं। अब बतलाओं ऐसे आदमी से काम कराने पर हमें कौन सी सहूलियत मिल जायेगी।

चतुर्वेदी मैडम की बातों से सहमत होते हुये देवांगन सर ने कहा- हां मैडम हालांकि मैने कभी रामप्रसाद को इस प्रकार का काम करने के लिये बोला नहीं है। पर उसके भाव से मैं समझ जाता हूं कि वह हमारे छोटे से भी कामों को करने के लिये भगवान के यहां से अनिच्छा का वरदान लेकर आया है। मेरा तो यह भी मानना है कि इसमें रामप्रसाद की कोई गलती नहीं है। वह तो बेचारा चाबी से चलने वाला खिलौना है और उसकी चाबी किसके हाथ में है यह बोलने की मुझे आवश्यकता नहीं है।

देवांगन सर अभी कुछ और कहना चाह रहा था, तभी लहरे मैडम उसे ईशारा करने के लिये अपना हाथ समान से ऊपर उठा रही थी कि चतुर्वेदी मैडम के हाथ से

टकरा गई। हाथ से हाथ टकराने पर चतुर्वेदी मैडम के हाथों में रखा पुस्तक का बण्डल टेबल के नीचे धड़ाम से गिरा। पुस्तक नीचे गिरते देख अचानक दोनों मैडम एक साथ नीचे की ओर झुकी और झुकते समय दोनों की सिर आपस में टकरा गई। दर्द से कराहते हुये दोनो मैडम धीरे धीरे उठी और सामान व्यवस्थित करने को छोड़कर कुर्सी पर बैठकर कराहने लगी। उन दोनों की स्थिति देखकर सहानुभूति दिखाते हुये देवांगन सर ने पूछा- मैडम ज्यादा चोट तो नहीं आई? आई होगी तो बतलाईये अभी जाकर डाक्टर को ले आता हूं। देवांगन सर को जवाब देते हुये कराहकर लहरे मैडम बोली- अरे रहने दीजिये देवांगन सर जी। अभी डाक्टर के यहां आते और जाते में समय लग जायेगा। छुट्टी का समय हो रहा है। ट्रेन छूट जायेगी। फिर यहां के डाक्टर करेगा ही क्या? कोई पेन किलर वगैरह दे देगा। सिर में टक्कर तो इतना जोरदार हुआ है कि हो सकता है सीटी स्कैन कराना पड़ जाये।

लहरे मैडम की बात पूरी होने पर चतुर्वेदी मैडम ज्यादा जोर से कराहते हुये बोली- मैडम आपको जरूरत ही क्या थी देवांगन सर को ईशारा करने के लिये हाथ उठाने की। वह बेचारा रामप्रसाद के बारे में बतला तो रहा था। हम लोग सामान को लगभग 80 प्रतिशत व्यवस्थित कर चुके थे और अब गिरने के कारण फिर से शून्य में आ गये और साथ में यह दर्द मिला सो अलग।

यह समझकर की चतुर्वेदी मैडम नाराजगी में बोल रही है, लहरे मैडम धीरे से बोली- मैडम तो मुझे क्या मालूम था कि यह सब कुछ हो जायेगा। अरे जितना दर्द आपको हो रही है न उससे ज्यादा ही दर्द मुझे हो रही है। मुझे कोई शौक नहीं थी मुफ्त में दर्द लेने का और फिर मैं भी शून्य में ही आ गई हूं।

दोनों मैडम के बीच होने वाली बातचीत के प्रवाह से देवांगन सर को यह भांपने में तनिक भी विलंब नहीं हुआ कि अगर इनकी बातचीत की दिशा नहीं बदली गई तो

छुट्टी होते होते दोनों में लड़ाई झगड़ा अनिवार्य रूप से शुरू हो जायेगी और ऐसा होना किसी के लिये भी लाभकारी नहीं होगा, क्योंकि ऐसी परिस्थिति में ट्रेन का छूटना सौ प्रतिशत निश्चित हो जाता। अतः बात के क्रम को बदलते हुये देवांगन सर ने लहरे मैडम से पूछा- अच्छा मैडम आप क्या पूछने के लिये मुझे रुकने का ईशारा करने वाली थी? लहरे मैडम कराहते हुये धीरे धीरे बोली- सर ओ मैं यह जानना चाह रही थी कि रामप्रसाद की चाबी किसके हाथ में है?

लहरे मैडम की प्रश्न सुनकर मुस्कुराते हुये देवांगन सर बोले- आप भी मैडम सब कुछ जानकर अनजान बन रही है। अरे सीधा-सीधा यह बोलिये न की चाबी मास्टर का नाम आप मेरे मुंह से ही सुनना चाह रही हैं। देवांगन सर की स्पष्ट बातों से लहरे मैडम मुस्कुराकर बोली सर जब आप ऐसा समझ ही रहे हैं तो अपने श्रीमुख से उनका नाम बतला ही दीजिये।

अपने प्रश्न के उत्तर की आशा में लहरे मैडम मुस्कराते हुये देवांगन सर की तरफ देखने लगी। इससे पहले की देवांगन सर कुछ बोलते चतुर्वेदी मैडम हंसते हुये बोली- आप भी मैडम गजब का प्रश्न की हैं। बेचारे देवांगन सर जी को धर्म संकट में डाल दिये हैं। देवांगन सर से न सही मुझसे ही सुन लीजिये। रामप्रसाद की चाबी मिश्रा सर जी के हाथ में है और किसी की हिम्मत है उसे चाबी भरने की।

जैसे ही चतुर्वेदी मैडम ने मिश्राजी का नाम ली वैसे ही पूरा स्टाफ रूम ठहाकों की गूंज से भर गया। और हंसते हंसते ही चतुर्वेदी मैडम बोलने लगी- अरे भाई। कोई भी देखने वाला यह जान जायेगा। इसके लिये कोई विशेष बुध्दिलब्धि की जरूरत नहीं है।

चतुर्वेदी मैडम को जवाब देते हुए हंसकर लहरे मैडम बोली- हां मैडम। हमारे टेबल के सामान न तो कभी पूर्ण रूप से अंदर हो पाता है और न ही बाहर। और मिश्रा

सर जी के टेबल को देख लीजिये कितना साफ सुथरा और व्यवस्थित रहता है। यह सब रामप्रसाद की ही देन है। मिश्राजी के कहने पर हर चीज को रामप्रसाद टेबल पर व्यवस्थित रखता है और काम हो जाने पर वैसे ही व्यवस्थित आलमारी में। और हम कभी बोल भी दें तो वहीं जवाब कि मैडम जब रखूंगा तब निकला कर भी मैं ही दूंगा। इससे अच्छा है खुद रखो और खुद निकालो। चाबी वाला खिलौना।

एक बार पुनः स्टाफ रूम तीनों की हंसी से गूंज गया। हंसते हंसते ही उनकी नजर दीवार पर लगी घड़ी पर गई। चार बजने में कुछ ही सेकण्ड बाकी था। तीनों की हाथ अचानक अपने बेग पर गया और कदम दरवाजे की ओर। तीनों बिना किसी से कुछ कहे स्कूल से ग्राउण्ड होते हुये मुख्य प्रवेष द्वार पार करके सड़क पर जैसे ही आये रामप्रसाद व्दारा छुट्टी के लिये बजाई गई घंटी सुनाई दी। ट्रीन ट्रीन ट्रीन। अब सड़क में तीनों आगे आगे और स्कूल के बच्चे उनके पीछे पीछे अपने घरों की ओर जाने लगे।